वर्ष 25 । अंक 8 । मार्च, 2024

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

World Water Day
22nd March

पृथ्वी के 71% प्रतिशत भाग पर पानी है, लेकिन इसमें से केवल 1% पानी ही पीने योग्य है।

पृथ्वी पर कुल पानी का 97% केवल समुद्र में है लेकिन यह पानी खारा होने के कारण पीने योग्य नहीं है।

पूरी धरती पर पानी ही एक ऐसा पदार्थ है जो ठोस, द्रव और गैस- इन तीनों अवस्थाओं में पाया जाता है।

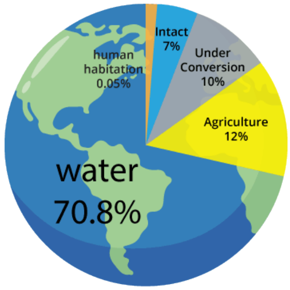

हमारे शरीर में 1% पानी की कमी होने पर प्यास लगती है और 10% की कमी होने पर मृत्यु हो सकती है।

एक वयस्क इनसान के शरीर का लगभग दो-तिहायी हिस्सा पानी होता है।

पानी को वैज्ञानिक भाषा में H_2O कहा जाता है, यह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन दो तत्वों से बना है।

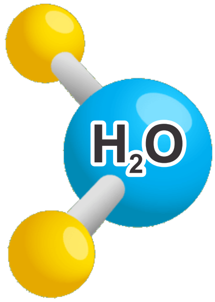

रूस की बैकाल झील में पृथ्वी पर पाए जाने वाले मीठे पानी का 20% मौजूद है।

यदि किसी टोंटी से 1 सेकंड में एक बूँद गिरती है तो 1 वर्ष में 11000 लीटर से अधिक पानी बरबाद हो जाता है।

सामान्यत: मानव के मस्तिष्क का 70% , खून का 83% , हड्डियों का 31% और दाँत का 10% भाग पानी है।

हाथी 5 किलोमीटर दूर से ही पानी का पता लगा लेता है।

WATER IN THE HUMAN BODY

Brain	70%
Blood	83%
Heart	79%
Bones	31%
Muscles	75%
Liver	85%
Kidneys	83%

प्रतिदिन उचित मात्रा में पानी पीना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

भोजन करने से ठीक पहले और भोजन के तुरन्त बाद पानी नहीं पीना चाहिए। भोजन के दौरान कुछ घूँट पानी पी सकते हैं।

80 प्रतिशत बीमारियों का कारण पानी में मौजूद बैक्टीरिया होते हैं। इन्ही बैक्टीरिया के कारण हर साल लगभग 34 लाख से भी ज्यादा लोंगो की मौत होती है।

प्यारे बच्चो,

'बच्चों का देश' पत्रिका आपकी सफलता की साथी है।

25 वर्षों से यह पत्रिका हर महीने आपसे मिलने आपके घर आती है।

आपके लिए लाती है ढेरों कहानियाँ, कविताएँ और जानकारियाँ।

आशा है आप इसे मन लगा कर पढ़ते हैं और

जो बात अच्छी लगे उसे जीवन में भी उतारते हैं।

आपके चिन्तन के लिए और

दूसरों के साथ चर्चा के लिए प्रस्तुत है

इस माह का विचार -

संयम
ही जीवन है।

खुद पर
नियन्त्रण
करना सीखो।

अणुव्रत गीत

संयममय जीवन हो।
नैतिकता की सुर सरिता में जन-जन मन पावन हो
संयम मय जीवन हो।।

अपने से अपना अनुशासन अणुव्रत की परिभाषा।
वर्ण जाति या सम्प्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो।
संयम मय जीवन हो।।1।।

मैत्री भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाये।
समता सह-अस्तित्व, समन्वय नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो।
संयम मय जीवन हो ।।2।।

विद्यार्थी या शिक्षक हो मज़दूर और व्यापारी।
नर हो नारी बने नीतिमय जीवनचर्या सारी।
कथनी करनी की समानता में गतिशील चरण हो।
संयम मय जीवन हो ।।3।।

प्रभु बनकर ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं
प्रामाणिक बनकर ही संकट सागर तर सकते हैं
शौर्य-वीर्य-बलवती अहिंसा ही जीवन दर्शन हो
संयममय जीवन हो ।।4।।

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा
'तुलसी' अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में पसरेगा
मानवीय आचार संहिता में अर्पित तन-मन हो
संयममय जीवन हो ।।5।।

रचयिता- आचार्य तुलसी

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 8 मार्च, 2024

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : सुशील कुमार, दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : अविनाश नाहर
महामन्त्री : भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
प्रकाशन मन्त्री : देवेन्द्र डागलिया
पत्रिका प्रसार संयोजक : सुरेन्द्र नाहटा

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

कहानी

09 **न्याय की लड़ाई**
रजनीकान्त शुक्ल
15 **होली के रंग, दादाजी के संग**
गुडविन मसीह
19 **गुलाल की होली**
प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
23 **खुशी मिली अपार**
महावीर रवांल्टा
31 **उफ! परीक्षा**
डॉ. मीरा रामनिवास
35 **आनन्दी की होली**
हरिन्दर सिंह गोगना
39 **सबसे अच्छा तैराक**
संदीप पांडे

अंक विशेष

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट: परिणाम

देखें पृष्ठ 28–29

आलेख

08 **राज्य पक्षी–9 : पहाड़ी मैना**
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी

11 **फणीश्वरनाथ रेणु**
डॉ. रंजना जायसवाल

26 **आओ जानें हमारा लोकतन्त्र– 3**
संचय जैन

34 **मेरा देश : गाँव विशेष–15**
शिखर चन्द जैन

38 **विश्व विरासत स्थल–6**
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

47 **अमर चित्रकथा के कथा शिल्पी : अनंत पै**
सुरेश बाबू मिश्रा

कविता

08 **राजू का पाजामा**
डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

10 **लहराते खेत**
डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

10 **गौरेया कहती है**
राजा चौरसिया

18 **रंग बिरंगी होली**
संजीव कुमार आलोक

18 **प्रेम लुटाती होली**
राजेन्द्र निशेश

30 **दीपक बन जाऊँ**
डॉ. ज्ञानप्रकाश पीयूष

स्तम्भ

03 **अणुव्रत गीत**
06 **सम्पादक की पाती**
07 **महाप्रज्ञ की कथाएँ**
16 **सुडोकू**
30 **प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये**
32 **आओ पढ़ें : नई किताबें**
33 **व्हाट्सएप कहानी**
37 **दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो**
41 **पढ़ो और जीतो, उत्तरमाला**
42 **कलम और कूँची**
44 **नन्हा अखबार**
46 **Science of Living : Jeevan Vigyan**
49 **जन्मदिन की बधाई**

विविधा

14 **विस्मयकारी भारत–14**
रवि लायटू

17 **वर्ग पहेली**
राधा पालीवाल

22 **अणुव्रत की बात**
मनोज त्रिवेदी

25 **दिमागी कसरत**
प्रकाश तातेड़

36 **बूझो तो जानें**
कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

40 **बताओ तो जानें**
चाँद मोहम्मद घोसी

48 **चित्रकथा**
संकेत गोस्वामी

49 **किड्स कॉर्नर**
वेणु वरियाथ

आवरण
राकेश शर्मा 'राजदीप'

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

आज सलोनी जब स्कूल से घर लौटी तो कंधे से अपना बैग उतारकर सीधे मम्मी के पास जाकर बैठ गई और स्कूल की बातें बताने लगी। मम्मी रोज ही सलोनी के स्कूल से आने के बाद वह कुछ समय उसके साथ बिताती हैं और स्कूल की घटनाओं के बारे में पूछती हैं। सलोनी भी खुलकर सब तरह की बातें अपनी मम्मी के साथ साझा करती है।

आज सलोनी ने स्कूल बैग से एक पर्चा निकाला और मम्मी के हाथों में देते हुए बोली– ''मम्मी, आज हमारे स्कूल में सब बच्चों ने मिलकर एक साथ यह गाना गाया, मुझे बहुत अच्छा लगा। हमें बताया गया कि आज पूरे देश में लाखों–लाखों बच्चों ने इस गीत को गाया है।''

पर्चे को अपने हाथ में लेते हुए मम्मी ने कहा– ''अरे भई, ऐसा क्या गीत है? जरा मैं भी तो देखूँ!'' मम्मी ने उस पूरे गीत को पढ़ा और बोलीं– ''सलोनी, यह तो बहुत अच्छा गीत है, क्या तुम इस गीत का मतलब भी समझती हो?''

सलोनी ने उत्साहित होते हुए कहा– ''क्यों नहीं मम्मी! आज स्कूल में कुछ लोग भी आये थे जिन्होंने हमें इस गीत का पूरा अर्थ समझाया और बताया कि हम यदि गीत में बताई बातों को अपने जीवन में उतार लें तो हमारा जीवन बहुत अच्छा बन सकता है।''

मम्मी ने सलोनी की बात का समर्थन करते हुए कहा– ''हाँ बेटा, जिसने भी इस गीत को लिखा है, जरूर वह कोई बहुत बड़ा संत–महात्मा और दूरदर्शी व्यक्ति रहा होगा।'' तभी सलोनी ने बताया– ''आचार्य तुलसी ने 75 साल पहले अणुव्रत आन्दोलन शुरू किया था और यह गीत भी उन्हीं का लिखा हुआ है। हमें अणुव्रत का अर्थ भी बताया गया– अणु मतलब छोटा, व्रत मतलब नियम। यानी छोटे–छोटे नियम लेकर हम अपने जीवन को अच्छा बना सकते हैं।''

सलोनी की बातें सुनकर मम्मी उसकी समझदारी पर मन ही मन मुस्कुरा रही थीं। सलोनी के कंधे पर हाथ रखते हुए बोलीं– ''यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं भी अणुव्रत के बारे में और अधिक जानकारी करूँगी और हम मिलकर यह कोशिश करेंगे कि कैसे अपने परिवार में भी इन छोटे–छोटे नियमों को अपनाकर परिवार की खुशियों को बढ़ा सकते हैं।''

मम्मी की बात सुनकर सलोनी और भी उत्साहित हो रही थी। उसने मम्मी को बताया – ''स्कूल में हमें सद्भावना, ईमानदारी और नशामुक्ति का संकल्प दिलाया गया।'' मम्मी ने उसी समय स्कूल के प्रिंसिपल को फोन लगाया और उन्हें ऐसे सुन्दर आयोजन के लिये धन्यवाद दिया।

बच्चो! आप भी अणुव्रत को जानो, समझो और अपने जीवन में उतारो तो निश्चय ही आपका भविष्य उज्ज्वल होगा। ढेरों शुभकामनाएँ।

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

मेरी माँ-तेरी माँ

महाराष्ट्र में एक राज्याधिकारी था। उसके पास एक क्लर्क काम करता था। अधिकारी के टेबल पर एक टेलिग्राम पड़ा था। अधिकारी आया। उसने टेलिग्राम पढ़ा। उसमें लिखा था– ''तुम्हारी माँ गुजर गयी।'' अधिकारी उदास होकर बैठ गया। क्लर्क आया। उसने पूछा– ''आज आप उदास क्यों हैं?'' अधिकारी ने कहा– ''मेरी माँ गुजर गयी, मैं उससे मिल नहीं सका। आज अन्त्येष्टि में शामिल होना है। मुझे जाना पड़ेगा।''

क्लर्क ने टेलिग्राम हाथ में लेकर कहा– ''श्रीमान्! यह टेलिग्राम तो मेरा है। मेरी माँ मर गई है। टेलिग्राम मेरे नाम से आपके पते पर आया है।'' यह सुनते ही अधिकारी का चेहरा बदल गया। उदासी मिट गयी। क्लर्क ने छुट्टी माँगी कि माँ की अन्त्येष्टि में जाना है। अधिकारी बोला– ''माँ बूढ़ी थी, मर गयी तो क्या हुआ? अभी तो तुम छुट्टी से आये हो। अब छुट्टी नहीं मिलेगी।''

कथाबोध : स्वयं का दर्द तो दर्द है और अन्य के कष्ट के प्रति असंवेदनशील होना, यह व्यवहार का दोगलापन है जो बहुत बुरी बात है।

अणुव्रत

संपादकीय कार्यालय

अणुव्रत भवन

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

संपादकीय कार्यालय

चिल्ड्रन'स पीस पैलेस

सदस्यता फॉर्म

मैं 'अणुव्रत'/'बच्चों का देश' पत्रिका का सदस्यता शुल्क नीचे दिए विवरण के अनुसार जमा करा रहा/रही हूँ–

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	₹ 750	₹ 350
3 वर्ष	₹ 1800	₹ 900
5 वर्ष	₹ 3000	₹ 1500
10 वर्ष	₹ 6000	₹ 3000
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 15000	₹ 7500

'अणुव्रत पत्रिका' हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
CANARA BANK
DDU MARG, NEW DELHI
A/c No.: 0158101120312
IFSC Code : CNRB0000158

'बच्चों का देश' हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Branch Rajsamand
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

कृपया मुझे इस पते पर पत्रिका भिजवाएं –

नाम : ____________________

पता : ____________________

____________________ पिन ______

मोबाईल ____________ ईमेल ____________

यह फॉर्म मय सदस्यता शुल्क इस पते पर भेजें –
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002 मोबाइल : 9116634512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

सदस्यता शुल्क ₹........ नकद/नेट बैंकिंग/चैक .... से प्राप्त हुए।

प्राप्तकर्ता का नाम .... हस्ताक्षर प्राप्तकर्ता..................

हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक ....

राज्य पक्षी–10

राज्य : छत्तीसगढ़ एवं मेघालय
अँग्रेजी नाम : Hill Myna
वैज्ञानिक नाम : *Gracula religiosa peninsularis*
फोटो : आनन्द गुप्ता

छत्तीसगढ़ एवं मेघालय का राज्य पक्षी

पहाड़ी मैना

यह मुख्य रूप से दक्षिण–पूर्व एशिया की चिड़िया है। इसकी कुल 5 प्रजातियों में से 3 भारत में मिलती हैं। यह वृक्षवासी पक्षी है जो जमीन पर बहुत कम उतरती है। यह अन्य पक्षियों की बोली की अच्छी नकल कर लेती है तथा पालतू बनाये जाने के बाद मनुष्य की बोली की भी नकल कर लेती है। इसकी शारीरिक संरचना अन्य मैनाओं से भिन्न होती है। यह बड़ी मैना है जिसकी लम्बाई 28–30 सेन्टीमीटर तक होती है।

इसके शरीर और पंखों का रंग गहरा चमकीला काला होता है तथा इस पर हरापन लिए हुए बैंगनी रंग की चमक होती है। इसके उड़ने वाले पंखों पर दोनों ओर सफेद धब्बे होते हैं। इसकी पूँछ व पंख छोटे होते हैं। इसके सिर पर दोनों ओर आँखों के नीचे से लेकर गर्दन के पीछे तक पीले रंग की त्वचा का एक धब्बा होता है जो इसकी एक खास पहचान है।

डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
जयपुर (राजस्थान)

पद्य कथा

राजू का पाजामा

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
हरदोई (उत्तरप्रदेश)

राजू भइया का पाजामा।
उठा ले गए बन्दर मामा।।

बड़े मजे से छत पर बैठे,
देख रहे हैं उलट–पुलट कर।
कभी गले में, कभी कमर में,
देख रहे हैं पहन–पहन कर।
लगता वे करने वाले हैं,
कोई नया अनोखा ड्रामा।।...

परेशान हैं राजू भइया,
कैसे पाजामा बच पाए।
तब तक उनके बूढ़े बाबा
टॉफी बिस्कुट केला लाए।
पड़े सोच में बन्दर मामा,
क्या कुछ लें छोड़ें पाजामा।।...

इतने में राजू की मम्मी,
मोटा सा डंडा ले आई।
बन्दर मामा ने सोचा,
भागो अब तो है आफत आई।
भागे छोड़–छाड़ पाजामा,
समझदार थे बन्दर मामा।...

न्याय की लड़ाई

स्वाति ने अपनी सहेली सुनीता से कहा– ''अरे सुना तुमने! सुमन की शादी उसके पिता ने तय कर दी है। उसके पड़ोस की लड़की बता रही थी। तभी तो वह आज स्कूल पढ़ने नहीं आई।'' –स्वाति ने रहस्य खोला। उस समय वे दोनों लड़कियाँ स्कूल की छुट्टी के बाद अपने घर वापस लौट रही थीं। अभी वे कुछ आगे बढ़ी ही थीं कि तभी पीछे से आवाज सुनाई दी। ''हमको भी साथ ले लो।'' उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो उनसे बड़ी कक्षा में पढ़ने वाली दो लड़कियाँ सरिता और सुषमा आती दिखाई दीं।

''आओ दीदी, कुछ सुना तुमने?'' –पास आते ही सुनीता ने उन दोनों से पूछा। ''क्या सुमन की शादी वाली बात।'' सरिता ने उनके सवाल का जवाब देते हुए कहा– ''हाँ, दीदी, देखो तो घोर अंधेर है। सुमन अभी बारह साल की ही तो है। मुझसे भी एक साल छोटी है।'' –स्वाति ने अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा। ''और मुझसे चार साल छोटी।'' –सुषमा ने भी उनकी बातों में खुद को शामिल करते हुए करते हुए अपनी बात जोड़ दी। ''इतनी कम उम्र में शादी नहीं होनी चाहिए। हमारे देश का कानून भी यही कहता है। हमने तो यही पढ़ा है स्कूल में।'' – पीछे से आ रही नीलम ने उनके साथ आते हुए अपनी बात जोड़ी।

इस तरह आपस में चिन्ता प्रकट करती हुए वे स्कूल से अपने घरों की ओर चल दीं। आज स्कूल में यही चर्चा गर्म थी कि गाँव की एक बारह साल की लड़की की शादी उसके पापा ने तय कर दी थी। यह हरियाणा राज्य में करनाल जिले के हरिसिंहपुरा नाम के गाँव की बात थी। उन लड़कियों ने अपने घरों में जाकर इस बात की चर्चा की। सभी घरों के लोग इसे बुरा बता रहे थे। मगर किसी के व्यक्तिगत घरेलू मामले में कौन पड़े? इसलिए कोई आगे आकर इसका विरोध नहीं कर रहा था। अब स्कूल जाते समय और छुट्टी के बाद घर आते समय इन लड़कियों के बीच यह विषय चर्चा का प्रमुख मुद्दा बन गया था।

अब रोज इसमें नयी–नयी सूचनाएँ जुड़ने लगीं। बारह साल की सुमन की जिससे शादी हो रही है, उस आदमी की उम्र तीस साल है। जिस घर में शादी हो रही है, उनसे सुमन के पिता भोपाल सिंह ने कर्ज ले रखा है। अपना कर्जा उतारने के लिए ही सुमन के पिता ऐसा कर रहे हैं। और एक दिन तो गजब हो गया जब उन्हें सूचना मिली कि यही नहीं, भोपाल सिंह ने अपनी दूसरी

देखें पृष्ठ 13...

लहराते खेत

लहर–लहर लहराते खेत,
फसलें खूब उगाते खेत।

गेहूँ, ज्वार, बाजरा देते,
परेशानियों को हर लेते।
हल हो जाए खाद्य–समस्या,
पूरी करते यही तपस्या।
श्रम का मोल चुकाते खेत,
कृषकों के मन भाते खेत।...

हरियाली के दिखते राजा,
खुशहाली का छेड़ें बाजा।
सोना–चाँदी ये बरसाएँ,
मुरझाए मन को हरसाएँ।
परोपकार दिखलाते खेत,
दुःख में भी मुसकाते खेत।...

बादल दे जाते हैं पानी,
पानी से ही बढ़े कहानी।
खाद खेत का जीवन जानो,
बैलों से है नाता मानो।
आलस से कतराते खेत,
सूखा दूर भगाते खेत।...

खेतों की अब संख्या कम है,
धरती माँ की आँखें नम हैं।
खेत कट गए शहर बन गए,
लगे शहर हैं कहर बन गए।
मानवता के नाते खेत,
गड़े शर्म से जाते खेत।...

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
गुरुग्राम (हरियाणा)

गौरैया कहती है

खूब चहकती रोज सवेरे,
अब तो जागो सबसे कहती।
कैसा भी मौसम हो लेकिन,
सारी विपदाओं को सहती।।

यह नन्ही–मुन्नी गौरैया,
दाने चुगती फुदक–फुदक कर।
छोटे पंख उड़ान बड़ी है,
आसमान तक उड़ती सर–सर।।

तिनकों से है बना घोंसला,
उसका तो वह घर कहलाए।
परिवार सहित रहने का सुख,
पेड़ों पर जीवन भर पाए।।

जब आँगन में झुंड बनाकर,
चूँ–चूँ करके यह आती है।
किलकारी भरते बच्चों को,
ढेरों खुशियाँ दे जाती है।।

सूर्योदय होने से पहले,
इसका आना लगे सुहाना।
कहती रहती यह हम सबसे,
पेड़ लगाना भूल न जाना।।

राजा चौरसिया
कटनी (मध्यप्रदेश)

ग्रामीण चेतना के साहित्यकार

फणीश्वरनाथ रेणु

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद के पश्चात् ग्रामीण अंचलों पर लिखने वाले कलमकार के तौर पर फणीश्वर नाथ रेणु का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। फणीश्वर नाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के अररिया जिले में हिंगना गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा–दीक्षा भारत और नेपाल में हुई। आपका विवाह बिहार के कटिहार जिले में हुआ था। रेणु ने मैट्रिक की पढ़ाई नेपाल के विराटनगर से की थी। तत्पश्चात् उन्होंने इन्टरमीडिएट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में किया था।

आन्दोलनकारी युवा

वह एक ऐसा समय था जब स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए घर–घर से लोग बाहर निकल रहे थे। इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के पश्चात् आप भी स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। बाद में 1950 में उन्होंने नेपाली क्रांतिकारी आन्दोलन में भी हिस्सा लिया जिसके परिणामस्वरूप नेपाल में जनतन्त्र की स्थापना हुई। आपने पटना विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ छात्र संघर्ष समिति में सक्रिय रूप से भाग लिया और जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति में अहम भूमिका निभाई।

लेखन की ओर बढ़े कदम

सन् 1952–53 में आपका स्वास्थ्य काफी खराब हो गया था। तब आपका लेखन की ओर झुकाव हुआ। उनकी कहानी 'तबे एकला चलो रे' में उनके इस कठिन समय की झलक देखने को मिलती है। उन्होंने हिन्दी में आँचलिक कथा लेखन की नींव रखी। रेणु के लेखन में दृश्य किसी फिल्म की तरह हमारी आँखों से गुजरते चले जाते हैं। चरित्र की एक–एक परत खुलती चली जाती है, उनके लेखन में कल्पना भी है, नरमी भी है, सजीवता भी है और रस से भरी भाषा भी है जो कहानियों में प्राण फूँकने और चरित्रों में जीवन देने का कार्य करती है।

ग्रामीण परिवेश के चित्रकार

रेणु की कहानियाँ अपनी बनावट, संरचना, स्वभाव, प्रकृति और शिल्प में हिन्दी कहानी की परम्परा में एक अलग और एक नई पहचान लेकर उपस्थित होती हैं। रेणु ने अपनी कहानियों से सिद्ध किया है कि उनकी आत्मा गाँवों में बसती है। उन्होंने ग्रामीण अंचल, कार्य–व्यापार और लोक जीवन, लोक संस्कृति को बड़ी ही कुशलता के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से उभारा है। गाँवों की पीड़ा, संघर्ष और बेचैनी को अपनी कहानियों में मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जिनका यथार्थ विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ है।

फणीश्वरनाथ रेणु ने कुल 63 कहानियाँ लिखी जिनमें से सबसे पहली कहानी "बट बाबा" है जो उन्होंने 23 वर्ष की उम्र में लिखीं और अन्तिम कहानी "अग्नि खोर" सन 1972 में साप्ताहिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित हुई। उनकी पहली कहानी "बट बाबा" में लोक मानस की आस्था, प्रकृति प्रेम,

पीड़ा आदि भाव भरपूर कुशलता के साथ उभर कर आए हैं।

हिन्दी कहानियों की परम्परा में आँचलिक भाषा का प्रयोग इनकी कहानियों में दिखलाई पड़ता है। रेणु की ग्राम जगत पर केन्द्रित लगभग सभी कहानियों में इसका प्रभावशाली ढंग से प्रयोग हुआ है जो कि उनकी कहानियों की एक अलग ही पहचान बनाता है।

रेणु की कहानियों की सबसे खूबसूरत बात... उनकी हर कहानी ग्रामीण स्पर्श और मिट्टी की सोंधी खुशबू से महकती हुई होती है। रेणु की लेखनी को देखकर ऐसा लगता है जैसे प्रेमचंद के बनाये खाकों में रेणु ने अपनी कल्पना और अपनी दृष्टि के रंग भरे हों। प्रेम, सद्भावना, सम्भावना, सहभागिता के गाढ़े और पक्के रंग उन्होंने चुन–चुन कर ऐसे भरे कि आज भी वे हमारी अन्तरात्मा पर छाये हुए हैं।

संघर्षशील रचनाकार

रेणु मानवीय भावनाओं के बेजोड़ लेखक हैं, लेकिन उनका रचनाकार मन उन सामाजिक, राजनीतिक और प्राकृतिक विसंगतियों को अनदेखा नहीं करता, जो किसी भी भावना–लोक को प्रभावित करती हैं। एक योद्धा रचनाकार के नाते रेणु ने स्वयं ऐसी विसंगतियों का सामना किया था। रेणु की एक कहानी "पहलवान की ढोलक" प्रकाशित हुई थी। कहानी में पहलवान मर जाता है पर चित नहीं होता। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यानी आजादी के पहले लिखी गई इन कहानियों में रेणु अपनी तिरछी नजरों से विश्वयुद्ध के काल का भयावह चित्र बनाने में सफल हुए हैं।

प्रसिद्ध रचनाएँ

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित 'मैला आंचल' (1954) हिन्दी–कथा–साहित्य का प्रथम और श्रेष्ठ आँचलिक उपन्यास है। रेणु ने बिहार के मिथिला अंचल को आधार बनाकर इस अंचल के जन–सामान्य के सुख–दुःख, रहन–सहन, संस्कृति, संघर्ष और लोकजीवन को अत्यन्त कुशलता व कलात्मकता से इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। 'मैला आँचल' के माध्यम से रेणु ने ग्रामीणों के आचार–विचार, नैतिकता–अनैतिकता, अच्छाई–बुराई को विस्तृत और व्यापक ढंग से वर्णित किया है। उन्होंने गाँववासियों के जीवन की समस्त दुर्बलताओं और सबलताओं का सफल चित्रण किया है। 'मैला आँचल' में पिछड़े हुए गाँव व पिछड़े हुए वर्ग–विशेष के लोक–जीवन का सटीक चित्रण हुआ है। 'मैला आँचल' के अतिरिक्त 'पंच लाइट', 'तीसरी कसम' और 'मारे गए गुलफाम' आपकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

सम्मान

'मैला आँचल' के लिए रेणु को सन् 1970 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था पर इस सम्मान के साथ एक विशेष घटना भी जुड़ी हुई है। रेणु सरकारी दमन और शोषण के विरुद्ध ग्रामीण जनता के साथ प्रदर्शन करते हुए जेल गये। रेणु ने आपातकाल का विरोध करते हुए अपना 'पद्मश्री' का सम्मान भी लौटा दिया।

अन्तिम यात्रा

फणीश्वरनाथ रेणु ने पटना में 'लोकतंत्र रक्षी साहित्य मंच' की स्थापना की। इस समय तक रेणु को 'पैप्टिक अल्सर' की गंभीर बीमारी हो गयी थी। लेकिन इसके बावजूद रेणु ने सन् 1977 में नवगठित जनता पार्टी के लिए चुनाव में काफ़ी काम किया। उन्होंने साहित्य की साधना जीवन के अन्तिम समय तक जारी रखी और साहित्य का सृजन करते रहे। 11 अप्रैल 1977 को रेणु इसी बीमारी की वजह से चल बसे किन्तु अपनी रचनाओं के माध्यम से वह पाठक वर्ग के बीच हमेशा जीवित रहेंगे।

डॉ. रंजना जायसवाल
मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

'न्याय की लड़ाई' पृष्ठ 9 का शेष....

छह साल की बेटी पुष्पा का विवाह भी छब्बीस साल के व्यक्ति से तय कर दिया है। अब तो हद हो गई। नीलम, सरिता, सुनीता, स्वाति और सुषमा ने इस अन्याय के खिलाफ अपने गुस्से का इजहार स्कूल में अपने अध्यापक के सामने किया।

''हाँ, तुम चाहो तो इसे रोक सकती हो। तुम्हारा पक्ष सत्य और न्याय का पक्ष है लेकिन यह इतना आसान नहीं होगा। इसके लिए तुम्हें लड़ना होगा। अपने निर्णय पर अडिग रहना होगा।'' अगर यह कर पाईं तो तुम्हारी बड़ी जीत होगी।'' —उनके शिक्षक ने उनका हौसला बढ़ाते हुए कहा।

''इस अन्याय के खिलाफ हम लड़ेंगे और हम जीतेंगे भी।'' —उन पाँचों ने कसम खाई। ''हमारा आशीर्वाद और शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ है।'' —उनके शिक्षक ने उन्हें आशीष देते हुए कहा।

उधर शादी की तैयारियाँ चल रही थीं और इधर ये पाँचों अपने विरोध के गुस्से को लेकर गाँव के पूर्व सरपंच नानू जी के पास जा पहुँचीं। न्यायसंगत बात को सुनकर उन्होंने भी इन पाँचों लड़कियों का समर्थन करने का निश्चय किया। उन्होंने पूछा— ''आखिर तुम पाँचों मुझसे क्या चाहती हो?'' ''हम चाहती हैं कि विवाह वाले दिन आप हमारे साथ उस घर पर चलें।'' —पाँचों ने आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा।

''ठीक है। चलेंगे ही नहीं, हक की बात भी कहेंगे। गलत बात का विरोध भी करेंगे।''— उन्होंने अपनी स्वीकृति दी।

आखिर शादी वाला दिन भी आ गया जिस दिन ये पाँचों सरपंच को लेकर विवाह स्थल पर जा धमकीं। जाते ही इन पाँचों लड़कियों ने विवाह रोकने की माँग कर दी। तब दूल्हा पक्ष के लोगों ने कहा—''जब दोनों पक्ष आपस में राजी हैं तो भला किसी तीसरे को इससे क्या एतराज?'' यहाँ तक कि सुमन भी पिता के दबाव में इसका विरोध नहीं कर रही थी।

लेकिन विरोध में उन्होंने जब दस साल की नीलम, तेरह साल की स्वाति व सुनीता, सोलह की सुषमा और सत्रह साल की सरिता को देखा तो दूल्हे पक्ष के लोग बच्चा समझकर उन्हें धमकाने लगे। उनमें काफी तर्क—वितर्क हुए और गर्मागर्म बहस भी हुई। यहाँ तक कि मार—पिटाई के इरादे से लाठियाँ भी उठा लीं। मगर ये पाँचों बहादुर लड़कियाँ सरपंच के साथ अपनी माँग पर चट्टान की तरह अडिग रहीं। बात जब ज्यादा आगे बढ़ी तो पुलिस कन्ट्रोल रूम को भी सूचित कर दिया।

गाँव में लड़कियों के साथ संरपंच के आ जाने से मेहमान एक—एक करके वहाँ से जाने लगे। इस बीच उन लोगों की ओर से विवाह कराने के तीन बार प्रयास किए गए। लेकिन पीटे जाने की धमकियों के बावजूद अपने जोरदार विरोध से इन पाँचों बालिकाओं की बहादुरी से उनके वे सारे प्रयास असफल रहे। आखिरकार उन लोगों को वह शादी रोकनी ही पड़ी।

गाँव में जब इतना हँगामा हुआ तो अगले दिन यह सारी घटना समाचार पत्र में प्रकाशित हो गयी जिससे प्रशासन हरकत में आया और पुलिस ने लड़के वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया। इन पाँचों के साहसिक प्रयास से दो नाबालिग बालिकाएँ सुमन और पुष्पा सामाजिक कुरीति का शिकार होने से बच गईं।

इन पाँचों का नाम उनके हौसले के साथ न्याय की लड़ाई लड़ने के लिए वीरता पुरस्कार के लिए भेजा गया। भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली द्वारा उन्हें राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। देश के प्रधानमंत्री ने जनवरी 2004 में इनके साहस की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

विस्मयकारी भारत-15

आन्ध्र प्रदेश व तमिलनाडु की सीमा पर स्थित
वेंकटनरसिम्हाराजुवारिपेट
(VENKATANARASIMHARAJUVARIPETA)
चेन्नई सेंट्रल के हाल में परिवर्तित नाम
पुरातची थलाईवर डॉक्टर एम.जी.रामचंद्रन
सेंट्रल रेलवे स्टेशन
के बाद किसी भी भारतीय रेलवे स्टेशन का दूसरा
सबसे बड़ा नाम है।

अपने देश के सबसे अधिक शिक्षित व्यक्ति थे डॉ. श्रीकांत जिचकर जिन्होंने एमबीबीएस, एमडी गोल्ड मेडलिस्ट, एलएलबी, एलएलएम, एमबीए, बेचलर इन जर्नलिज्म, संस्कृत में डी.लिट. की उपाधि यूनिवर्सिटी टॉपर, एमए (अंग्रेजी, हिंदी, हिस्ट्री, साइकोलॉजी, सोशियोलॉजी, पॉलिटिकल साइंस, आर्कियोलॉजी, एंथ्रोपोलॉजी) आदि 20 स्तरीय डिग्रियां विभिन्न विश्वविद्यालयों से उच्चतम अंकों में प्राप्त की थीं।
25 वर्ष की अल्पायु में वे राजनीति में आ गए और फिर विधायक के तौर पर चुन लिए गए थे परन्तु दुर्भाग्यवश केवल 50 वर्ष की उम्र में एक सड़क दुर्घटना में इस प्रतिभाशाली व्यक्ति का निधन हो गया।

कोलकाता में चाइना टाउन (टांगरा) इलाके का चाइनीज काली मन्दिर प्रसाद के मामले में पूरी तरह अनोखा है। मन्दिरों में जहां प्रसाद में अमूमन फल, मिठाई या बताशे आदि चढ़ाए जाते हैं, वहीं इस मन्दिर में प्रसाद के रूप में नूडल, चाउमीन, फ्राइड राइस, मंचूरियन व चॉपसुई जैसी चीजें चढ़ती हैं और इसकी वजह है यहां के चीनी लोग जिनकी सक्रियता इस मन्दिर में न सिर्फ ज्यादा है बल्कि मन्दिर की पूरी व्यवस्था भी एक चीनी के ही हाथ है।

मणिपुर की रहने वाली 27 वर्षीय किन्नर बिशेष हुइरेम ने अपनी खूबसूरती की वजह से थाईलैंड में हुए एक ऐसे मिस इंटरनेशनल ब्यूटी क्वीन कांटेस्ट में हिस्सा लिया था जो केवल किन्नरों के लिए ही आयोजित किया जाता है।
वैसे बंगलूरु विश्वविद्यालय से बिशेष हुइरेम फैशन डिज़ाइनिंग की पढ़ाई कर चुकी हैं और अभी ये मणिपुर की फिल्मों में काम कर रही हैं।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

होली के रंग दादा जी के सँग

राहुल के दादाजी ने अपने घर के आँगन में बहुत सारे गमलों में तरह–तरह के फूलों के पौधे लगा रखे थे, जिनकी देखभाल वह स्वयं किया करते थे। इतना ही नहीं राहुल के दादाजी रोज सुबह–शाम गमलों के आस–पास चिड़ियों के लिए दाना–पानी भी रखते थे और बहुत सारी छोटी–छोटी चिड़ियाँ वहाँ दाना खाने आती थीं। चिडियों के साथ–साथ वहाँ रंग–बिरंगी तितलियाँ और गिलहरियाँ भी आती थीं। सब साथ मिलकर खुश होते थे। आपस में अपनी भाषा में बात करते थे और फूलों के पौधों पर झूला झूलते थे।

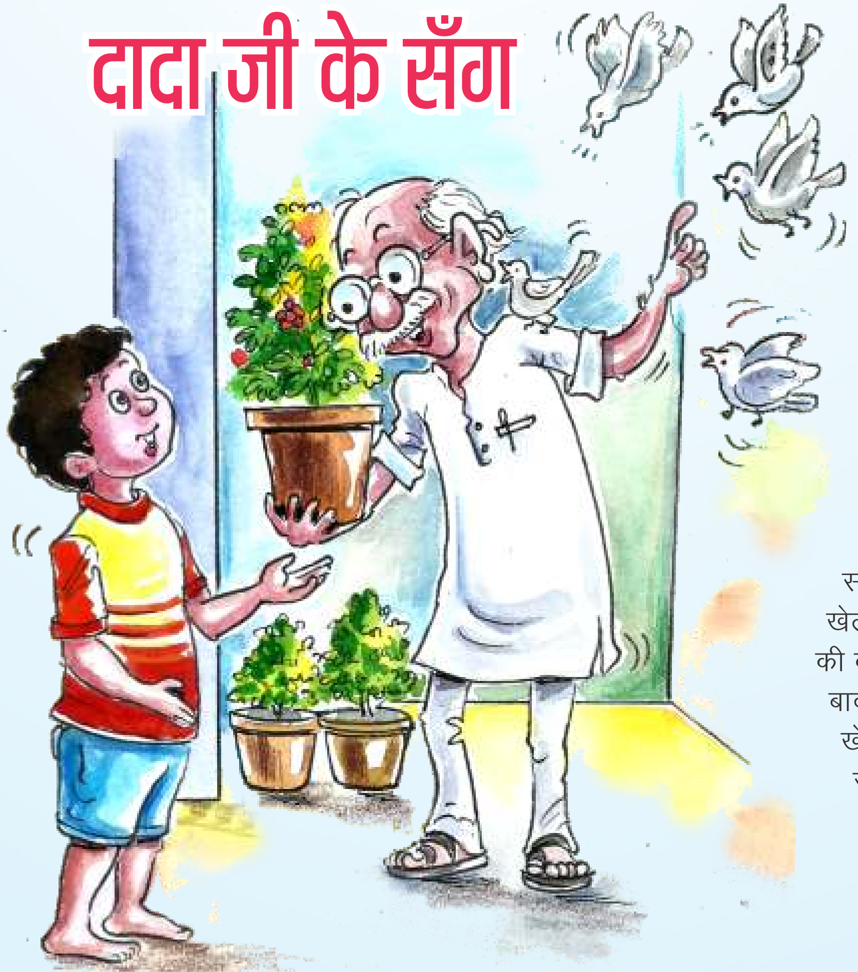

एक दिन सुबह–सुबह घर के आँगन में बहुत सारी चिड़ियों की चीं... चीं... चूं.... चूं.... का शोर सुनकर नन्हा राहुल चौंक पड़ा। उसे ऐसा लगा जैसे, कोई चिड़ियों को परेशान कर रहा है ? राहुल ने बाहर आँगन में आकर देखा, उसके दादाजी आँगन में रखे फूलों के गमलों को उठाकर अन्दर गैलरी में रख रहे थे और उनके इर्द–गिर्द बहुत सारी छोटी–छोटी चिड़ियाँ इकट्ठा होकर चहचहा रही थीं।

राहुल को देखते ही चिड़ियों का शोर और तेज हो गया। लेकिन दादाजी चिड़ियों की तरफ ध्यान न देकर अपना काम कर रहे थे। राहुल ने दादाजी से पूछा कि चिड़ियाँ इस तरह क्यों चीख रहीं हैं, तो दादाजी ने उसे बताया– "चिड़ियाँ उनसे लड़ रही हैं और उनसे पूछ रही हैं कि मैं इन फूलों के गमलों को यहाँ से क्यों हटा रहा हूँ?"

"यह बात तो मैं भी आपसे पूछ रहा हूँ कि आप इन गमलों को यहाँ से क्यों हटा रहे हैं? यहाँ से गमले हटायेंगे तो इनका क्या होगा, कहाँ ये खेलेंगी और कहाँ दाना खायेंगी? राहुल के दादाजी ने कहा– "बेटा, ये समझ नहीं रही हैं, मैं इनके ही खेलने–कूदने और खाने–पीने की व्यवस्था कर रहा हूँ। दो दिन बाद होली का त्योहार है। होली खेलने वालों को होली खेलते समय इतना भी होश नहीं रहता है कि वे कहाँ और किसके ऊपर रंग डाल रहे

हैं, उन्हें तो बस होली खेलने से मतलब होता है। बहुत से लोग तो छोटे–छोटे पशु–पक्षियों पर और कुत्ते–बिल्लियों पर भी रंग डाल देते हैं।'' राहुल ने सहमति में सिर हिलाया।

दादाजी फिर बोले– ''बेटा! होली खेलना बुरी बात नहीं है। सबको होली खेलनी चाहिए और खूब होली खेलनी चाहिए, लेकिन होली खेलते समय सबको इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए कि हम कहाँ और किसके ऊपर रंग डाल रहे हैं? पहली बात तो हमें गुलाल से सूखी होली खेलनी चाहिए। पानी के रंगों से बचना चाहिए, क्योंकि पानी के रंगों में हानिकारक केमिकल होते हैं। जिनसे न सिर्फ इनसानों की त्वचा को नुकसान पहुँचता है बल्कि पेड़–पौधों और पशु–पक्षियों को भी नुकसान होता है।''

कुछ रुककर दादाजी ने बात आगे बढ़ाई– ''तुम्हें याद होगा पिछले साल सब लोगों ने हमारे घर के आँगन में पानी वाले रंगों से होली खेली थी, तुम्हारे मम्म–पापा के ऑफिस से बहुत सारे लोग आए थे और हमारे पास–पड़ोस के लोग भी थे। सबने मिलकर कितना उधम मचाया था। पानी के रंगों का जमकर इस्तेमाल किया था। पूरे एक हफ्ते तक हमारे घर का आँगन नीला, हरा और लाल–पीला दिखाई दे रहा था। कितनी मुश्किल से घर साफ हुआ।

राहुल को भी कुछ याद आया, वह बोला– ''दादू! इतना ही नहीं, घर के आँगन में रखे फूलों के सारे गमलों के पौधे पानी के रंगों के हानिकारक प्रभाव से सूख गए थे। तब हम सबको कितना अफसोस हुआ था और हमारे नन्हे डॉगी की आँख में रंग गिर जाने से उसकी आँख कितने दिन तक खराब रही थी, कितनी मुश्किल से ठीक हुई थी हमारे डॉगी की आँख।"

दादाजी ने समझाते हुए कहा– ''बेटा यह होली का त्योहार है ही ऐसा, जिसे मनाते समय सब अपनी सुध–बुध खो देते हैं। अगर किसी को मना भी करो, तो लोग बुरा मान जाते हैं। इसलिए लोगों को मना करने से तो अच्छा है हम दो–तीन दिन के लिए इन गमलों को ही उठाकर अन्दर रख लें। अन्दर रखने से न सिर्फ ये फूलों के पौधे सुरक्षित रहेंगे बल्कि इन पर बैठने वाली चिड़ियों और तितलियों की जान भी बची रहेगी। होली हो जाने के बाद वापस इन्हें आँगन में रख देंगे। बस फिर चिड़ियाँ भी खुश और तितली भी खुश।"

"फिर हम बेफिक्र होकर होली खेलेंगे।" राहुल ने हँसते हुए कहा और अपने दादाजी के साथ फूलों के गमले उठाकर अन्दर गैलरी में रखवाने लगा।

गुडविन मसीह
बरेली (उत्तर प्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाए प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

2					5			6
	3	4		6			1	
1			8		3			4
7		2	5					8
		3		1			4	
8				2		6		
9		6				7		1
	8							
		5		9	7	3		2

उत्तर इसी अंक में

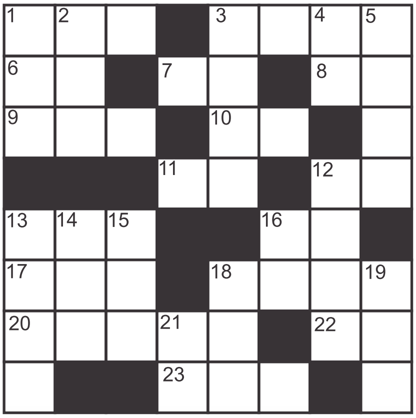

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. होली के दूसरे दिन रंग खेलने का त्योहार (3)
6. प्रसिद्ध योग गुरु (4)
7. पहाड़ (2)
8. प्रत्येक, शिव (2)
9. देवर्षि (3)
10. जगह (2)
11. ठाट बाट, तड़क–भड़क (2)
12. जीवन, प्राण, दम (2)
13. सिलवट (3)
16. प्रसिद्ध संत व कवि (2)
17. घेरा (3)
18. वट–वृक्ष (4)
20. नियन्त्रित मूल्य पर खाने–पीने की वस्तुओं के लिए जरूरी कार्ड (5)
22. गेहूँ के महीन कण, दाना (2)
23. मोती, माला का एक भाग (3)

ऊपर से नीचे

1. रूई को स्वच्छ करने की क्रिया (3)
2. गुरुद्वारा में निःशुल्क भोजन व्यवस्था (3)
3. 30 मार्च को इस राज्य की स्थापना हुई। (4)
4. शरीर, तन, बदन (2)
5. देवता या ऋषियों द्वारा प्राप्त आशीष (4)
12. हाथ की सफाई में माहिर, खेल (4)
13. भगवान शिव के विवाह का दिन (4)
14. गागर, घड़ा (3)
15. नेत्र, लोचन, आँख (3)
16. स्त्री, पत्नी, दान का अपभ्रंश (2)
18. झंझट, परेशानी (अंग्रेजी शब्द) (3)
18. मसिपात्र, स्याही पात्र (3)
21. कार्य, काज, कर्म (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।

साधु से उसकी जाति मत पूछो बल्कि उनसे ज्ञान की बातें करो, उनसे ज्ञान लो। मोल करना है तो तलवार का करो, म्यान पर ध्यान मत दो। अर्थात हमें महत्त्वपूर्ण बात की ओर ही ध्यान देना चाहिये, फिजुल की बातों पर नहीं।

रंग बिरंगी होली

आई रंग बिरंगी होली,
आँगन–आँगन में रंगोली।

खेत हुए सरसों से पीले,
कलियों के मुख रंग रंगीले।
गीत मधुर कोयल गाती है,
डाल फूल की झुक जाती है।

फूल–फूल पर भौंरा गाए,
गाने को हर मन ललचाएँ।
उड़ता है अबीर गलियारे,
पिचकारी छोड़े फव्वारे।

गालों पर गुलाल मलते हैं,
फाग सभी गाते चलते हैं।
छलक गया रंगों का प्याला,
होली का त्योहार निराला।

संजीव कुमार आलोक
बाढ़ (बिहार)

प्रेम लुटाती होली

मस्ती की गागर छलकाती,
प्यार–भरे गीतों को गाती,
ढोल–नगाड़े खूब बजाती,
प्रेम लुटाती होली!

माथे पर रंगोली लाती,
पिचकारी के खेल दिखाती,
मीठी गुझिया को खिलवाती,
धूम मचाती होली!

नकली रंगों को ठुकराती,
फूलों की बस महक लुटाती,
नवजीवन का पाठ पढ़ाती,
सब को भाती होली!

राजेंद्र निशेश
चंडीगढ़

नाटिका

गुलाल की होली

पात्र परिचय : कक्षा 7—8 के पाँच विद्यार्थी, प्रधानजी, गुरुजी, खुशबू

दृश्य : पहला

प्रदीप : हमारा गाँव हर दृष्टि से खुशहाल है। इस गाँव में पीने के पानी की सुविधा है। स्वास्थ्य की सुविधा है। तीन स्कूल भी हैं। यह गाँव सड़क से जुड़ा हुआ भी है। हर दृष्टि से उत्तम गाँव की सबसे बड़ी समस्या 'कीचड़ की होली' है। यह हमारे गाँव की सबसे बड़ी बुराई है। इसे हमें दूर करना है।

प्रकाश : सही कह रहे हो मित्र। कल मेरे स्कूल में पड़ोस के गाँव की कबड्डी टीम खेलने आई थी। मैंने जब अपने गाँव की तारीफ की तो उस टीम के एक सदस्य ने कहा– ''तुम तो चुप ही रहो। होली आ रही है। अपने गाँव की कीचड़ की होली खेलकर अपने गाँव का नाम रोशन करना।'' चुप रहने के अलावा मेरे पास कोई रास्ता नहीं था।

प्रतीक : मित्र! मेरे सामने भी कई बार ऐसी ही स्थिति आई है कि जब मैं कुछ बोल नहीं सका।

प्रभा : सचमुच हमारे गाँव की यह बहुत बड़ी बुराई है। क्या इस बुराई पर रोक लगाने के लिए हम लोग कुछ कर सकते हैं?

प्रीति : अगर हमारे मन में इस बड़ी बुराई को दूर करने की बात आई है तो हम अवश्य सफल होंगे। हम एक नहीं पाँच हैं। कहते हैं कि संगठन में शक्ति होती है अतः हमारे संगठित प्रयास से गाँव की इस बड़ी बुराई को जाना ही होगा।

प्रदीप : प्रीति, बिलकुल सही कह रही है। हमारे मन में यह बात आ गई है कि यह हमारे गाँव की एक बुराई है। इसे हमें दूर करना ही है।

प्रकाश : सही कह रहे हो मित्र! यह त्यौहार भी तो बुराई पर अच्छाई की जीत का है।

इसीलिए बुराई की प्रतीक होलिका जल गई और भक्त प्रहलाद बच गया।

प्रीति : जब अच्छे कार्यों के प्रतीक के रूप में यह त्यौहार मनाया जाता है, तब हमारे गाँव में कीचड़ की होली क्यों? हमें इसे रोकना होगा।

सभी : (एक साथ) हाँ– हाँ, हमें रोकना होगा। इसके लिए हमें कुछ करना होगा।

प्रदीप : मित्रो, मेरे दिमाग में एक तरकीब सूझ रही है। हमें गाँव के प्रधान रामरतन जी, स्कूल के हेड मास्टर चंद्रभान जी एवं महिलानेत्री खुशबू से मिलना होगा। उनसे इस समस्या के बारे में बात करनी होगी। एक सप्ताह बाद होली का त्यौहार है। इस बार की होली अबीर–गुलाल की होली होगी।

सभी : (एक साथ) हाँ, हमारे गाँव की अगली होली अबीर–गुलाल की होली होगी।

(सभी प्रधान जी से मिलने के लिए जाते हैं।)

दृश्य : दूसरा

प्रधान जी : (बच्चों को एक साथ देखकर) तुम लोग जरूर चन्दा लेने आए होंगे। गाँव के बड़े लोग चन्दा लेकर गए हैं। तुम लोग चन्दा लेकर क्या करोगे?

प्रतीक : प्रधान जी ? हम चन्दा लेने नहीं आए हैं। होली का त्यौहार नजदीक है। हम बच्चे चाहते हैं कि अब हमारे गाँव की कीचड़ की होली बन्द होनी चाहिए। इस बार से हमारे गाँव में अबीर–गुलाल की होली होनी चाहिए। इसके लिए हम आपसे मदद माँगने आए हैं।

प्रधान जी : तुम लोग चाहते हो कि पुरखों के जमाने से चली आ रही कीचड़ की होली बन्द हो जाए। यह होली हमारे गाँव की शान है। इसे मैं हरगिज बन्द नहीं होने दूँगा।

प्रीति : अंकल! यह हमारे गाँव की शान नहीं है। यह कलंक है। इस कलंक को दूर कर आप भी शान से कह पाएँगे कि यह बुराई मेरे समय में बन्द हुई है। अंकल, गाँव की एक बेटी आपसे कुछ माँगने आई है। आशा है, आप निराश नहीं करेंगे।

प्रकाश : अंकल, कल हमारे स्कूल में कबड्डी की एक टीम दूसरे गाँव से आई थी। उस टीम के एक सदस्य ने कहा– ''जिस गाँव में कीचड़ की होली खेली जाती हो, उस गाँव में हम खेलने नहीं जा सकते। हम गुरुजी के दबाव में यहाँ आए हैं।'' अंकल, अब भी आप इसे अपने गाँव की शान कहेंगे।

प्रधान जी : ऐसा कहा उसने! हम ऐसी बात कैसे बरदाश्त कर सकते हैं? इसका मतलब दूसरे गाँव के लोग हमारे गाँव को अच्छा गाँव नहीं मानते हैं। तुम लोग सही कह रहे हो। तब तो इस कीचड़ की होली को बन्द करना ही है। मुझसे जो भी मदद चाहोगे, तुम्हें मिलेगी।

(अब बच्चे महिलानेत्री खुशबू के पास जाते हैं।)

दृश्य : तीसरा

प्रीति : मैडम, हमें आपकी मदद चाहिए। हम अपने गाँव की कीचड़ की होली को बन्द करना चाहते हैं। इस बार से हमारे गाँव में अबीर–गुलाल की होली होनी चाहिए।

खुशबू : तुम बच्चों के विचार बहुत नेक हैं। इसके लिए तुम्हें प्रधान जी से बात करनी होगी।

सभी : (एक साथ) हमने प्रधान जी से बात कर ली है। वे तैयार हैं। इसके लिए हमें आपकी भी मदद चाहिए।

खुशबू : कीचड़ की होली महिलाओं के लिए सबसे बड़ी समस्या है। जो काम हमें करना चाहिए था, वह काम तुम बच्चे आगे होकर कर रहे हो। इससे बढ़कर

खुशी और क्या हो सकती है! मेरे नेतृत्व में महिला शक्ति तुम्हारे साथ है।

(इसके बाद सभी बच्चे गुरुजी के पास जाते हैं)

दृश्य : चौथा

गुरुजी : आज छुट्टी के दिन तुम लोग मेरे पास क्यों आए हो? तुम लोगों ने अपना होमवर्क पूरा कर लिया है क्या?

सभी : (एक साथ) हाँ गुरुजी! हमने अपना होमवर्क पूरा कर लिया है। हम बच्चे अपने गाँव की बुराई 'कीचड़ की होली' को बन्द करना चाहते हैं। इसके लिए हमें आपके मदद की जरूरत है।

गुरुजी : मैं कई वर्षों से इस बुराई को दूर करने के बारे में सोच रहा था। कुछ कर नहीं पाया, इसका मुझे दुःख है लेकिन तुम इस कार्य को अपने हाथ में ले रहे हो, मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हारे साथ हूँ।

दृश्य : पाँचवा

(गाँव के प्रमुख लोगों को अपने साथ जोड़कर सभी बच्चे एक स्थान पर इकट्ठे होते हैं)

प्रीति : सुना है, इस बार कीचड़ के दो बड़े टब के स्थान पर तीन टब तैयार किए गए हैं। कौन कहे बुराई को कम करने की, यहाँ लोग बुराई बढ़ा रहे हैं।

प्रदीप : ये लोग बुराई बढ़ाएँगे और हम लोग बुराई समाप्त करेंगे।

प्रभा : अब हमारा अगला कदम क्या होगा? ये कीचड़ के तीन टब हम लोग कैसे हटाएँगे?

प्रीति : गाँव की महिलाओं को जागृत करने का काम खुशबू मैडम करेंगी। गाँव के बड़े बुद्धिजीवी लोगों को समझाने का काम गुरुजी करेंगे और टब के लिए हमें प्रधान जी से मदद लेनी होगी।

(यह कहकर प्रीति ने बारी–बारी से सभी के कान में कुछ कहा। सभी के चेहरे पर प्रसन्नता व सफलता का एहसास था।)

दृश्य : छठा

(होली का दिन था। जब लोगों ने एक दूसरे पर कीचड़ फेंकने के लिए टब का कपड़ा हटाया तो कीचड़ के स्थान पर अबीर–गुलाल पाकर सब दंग रह गए। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि रातभर में यह सब कैसे हुआ? तभी गुरुजी और खुशबू के नेतृत्व में अबीर–गुलाल एक दूसरे को लगाकर लोग गले मिल रहे थे और अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे)

प्रतीक : हम सहयोग के लिए प्रधान जी के आभारी हैं। उन्होंने रात में टब से कीचड़ खाली कराकर अबीर–गुलाल उसमें डालकर जो हमारा सहयोग किया है उसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है।

प्रीति : मैं मैडम खुशबू और गुरुजी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने अपने सम्पर्क द्वारा गाँव वालों को समझाकर इस बुराई को दूर करने में बहुत बड़ी मदद की।

प्रधान जी : बच्चो! हमने जो किया यह हमारा कर्त्तव्य था। हमें यह बहुत पहले कर लेना चाहिए था। बरसों से चली आ रही बुराई को तुम बच्चों ने एक झटके में समाप्त कर दिया। इसके लिए तुम सब प्रशंसा के काबिल हो। गाँव वालों को तुम पर नाज है। हमें इस बात का गर्व है कि इस गाँव में तुम्हारे जैसे बच्चे भी हैं अतः गाँव का भविष्य भी बहुत उज्ज्वल है।

(प्रधान जी, गुरु जी और मैडम खुशबू ने पाँचों बच्चों को बारी–बारी से माला पहनाकर सम्मानित किया। 'भारत माता की जय हो' के घोष के साथ आसमान गूँज उठा। इसी के साथ चारों तरफ बच्चों के कार्य की प्रशंसा हो रही थी। गाँव के साथ जुड़ा कीचड़ वाली होली का बदनाम धुल चुका था।)

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
लाडनूं (राजस्थान)

अणुव्रत की बात

हमारा शासन लाजवाब
तुम्हारा शासन सबसे खराब
हमारे शासन सबसे खास
तुम्हारा शासन सिर्फ बकवास
तुम्हारे शासन में गरीबी, घोटाले, चोरी, भ्रष्टाचार...
तुम्हारे शासन में बेरोजगारी, अपराध, लूट, तानाशाही...
अच्छा चल, तू बता... हम लोगों में किसका बेहतर शासन ??
पूछा है तो बताता हूँ... शासन तभी अच्छा होता है जब व्यवहार में हो
अनुशासन

खुशी मिली अपार

''साक्षी तुम्हें कितनी बार कहा है कि इन बच्चों के साथ मत खेला करो। मिट्टी में खेलते हुए तुम्हारे सारे कपड़े गन्दे हो गए हैं। तुम्हें इन गन्दे बच्चों के साथ...।'' साक्षी के मिट्टी में सने कपड़े देखकर गुस्से में पापा उस पर बरस पड़े थे।

''वे गन्दे नहीं हैं पापा। शालू और नैना बहुत अच्छी हैं। वे मुझे बहुत प्यार करती हैं।'' मासूम साक्षी ने अपने सीधे–सादे अन्दाज में उत्तर दिया था।

''चुप! तुम दिनोंदिन जिद्दी होती जा रही हो।'' पापा ने उससे कहा और फिर गुस्से में अपने पैर पटकते हुए बाहर की ओर निकल गए। पापा के जाने के बाद साक्षी का मन एकदम उदास हो गया था। उसने अपनी पीठ से बस्ता उतारकर एक ओर रखा और फिर बरामदे में बैठी माँ के पास चली गई।

''आ गई मेरी बच्ची!'' माँ ने आते ही उसे गले से लगा लिया। सहसा उसके गन्दे कपड़ों को देखकर पूछ बैठी– ''तुम्हारी ड्रेस पर मिट्टी कैसे लगी?''

''व वो!'' वह हकलाने सी लगी थी। डर रही थी कि माँ को कैसे बताए? कहीं पापा की तरह माँ ने भी उसे डाँटा तो! ''हाँ! बता न, कहीं गिर तो नहीं गई थी? कहीं चोट तो नहीं लगी?'' परेशान सी माँ उसे बड़े गौर से देखने लगी थी। एक तरह से जैसे वह उसका बारीकी से मुआयना कर रही हो। ''नहीं, बस यूँ ही खेलते हुए।''

''अच्छा, तो फिर आज भी रास्ते में खेलती हुई आई।'' माँ बात की तह तक पहुँचने की कोशिश में आगे बोलने लगी थी। ''हाँ, माँ।' कहती हुई वह माँ के करीब आकर उससे एकदम सट गई थी। ''और कौन–कौन थे तेरे साथ?'' माँ ने बच्चों की तरह चहकते हुए उससे पूछा।

''मम्मी वो!'' साक्षी बताने वाली थी लेकिन फिर उसे लगा कि अगर उसने नाम बता दिए तो पापा की तरह माँ भी उसे डाँटने न लगे। ''वो'' वह वहीं अटक गई थी। ''वो वो क्या? कोई नाम तो होगा उनका!'' मम्मी ने सख्ती से पूछा। ''एक शालू और दूसरी नैना'' साक्षी ने कहा। ''शालू और नैना?'' मम्मी ने दोहराया। ''हाँ मम्मी!'' उसने किसी अपराधी की तरह गर्दन झुकाकर कहा।

''शालू और नैना! वे तो बहुत अच्छी लड़कियाँ हैं। पढ़ने–लिखने में भी होशियार हैं। उनकी प्रिंसिपल उनकी बहुत तारीफ कर रही थी।'' ''लेकिन पापा तो...'' वह आगे कुछ कहना चाहती थी लेकिन माँ ने इशारे से उसे रोक दिया और बोली– ''तुम्हारे पापा को वे लोग नहीं सुहाते। उनकी एक ही रट है कि छोटी बस्ती में रहने वाले लोग एकदम बुरे होते हैं।''

''सच माँ क्या ऐसा ही है?'' – साक्षी ने पूछा।

''नहीं मेरी बच्ची ऐसा नहीं है। जरूरी नहीं कि सब एक जैसे हों। हाँ, एक मछली जरूर सारे तालाब को गन्दा कर सकती है।''

मम्मी ने बात आगे बढ़ाई– ''तुम्हारे पापा ऑफिस आते–जाते हुए उस बस्ती से गुजरते हैं। वहाँ मिट्टी व गन्दगी में नंग–धड़ंग घूमते बच्चों और शराब पीकर गाली–गलौज करते, लड़ते–झगड़ते लोगों को देखकर उन्हें लगता है कि उस बस्ती में रहने वाले सारे लोग ऐसे ही होंगे।'' मम्मी उसे बता रही थी और साक्षी उनकी बात को ध्यान लगाकर सुन रही थी। ''लेकिन शालू और नैना के मम्मी–पापा तो बहुत ही अच्छे हैं। बेशक वे उस गन्दी बस्ती में रहते हैं लेकिन उनकी सोच सबसे अलग है।'' ''कैसे मम्मी?'' इस बीच मम्मी उसके लिए दूध गर्म करके ला चुकी थी।

''शालू और नैना की मम्मी आसपास के घरों में झाड़ू–पोंछा, सफाई और बर्तन माँजने का काम करती हैं, तो उनके पापा मजदूरी करने जाते हैं।'' साक्षी दूध का गिलास लेकर दूध भी पी रही थी।

''अभी कुछ दिन पहले ही उसकी मम्मी मुझे मिली थी। वह पूछ रही थी कि क्या मैं साक्षी की मम्मी हूँ? मैंने हाँ कहा तो बताने लगी कि मेरी बेटियाँ शालू और नैना आपकी बेटी साक्षी के साथ ही स्कूल में पढ़ती हैं।''

तभी पापा आए तो उन्हें देखकर माँ–बेटी दोनों चुप हो गई थीं। ''आज माँ–बेटी में क्या बात चल रही थी?'' अपना बैग एक ओर रखते हुए पापा बोल पड़े थे। ''बात क्या वही बच्चों के खेलने की।'' मम्मी बताने लगी और इस बीच साक्षी ने पापा के लिए पानी का गिलास लाकर उनके सामने रख दिया था। ''हाँ, इसे मैं वही समझा रहा था कि उनके साथ न खेला करे लेकिन हमारी साक्षी है कि एक नहीं सुनती।'' पापा ने एक साँस में ही अपनी बात कह डाली थी। पापा की बात सुनकर साक्षी का खिला चेहरा एक बार फिर मुरझा गया था।

''उनके साथ खेलने में क्या बुराई है? वे भी हमारी साक्षी की तरह हैं। उसी के साथ स्कूल में पढ़ती हैं।'' मम्मी बताने लगी। ''वे साक्षी के साथ पढ़ती हैं? क्या बात कर रही हो!'' पापा आश्चर्य से फट पड़े थे। ''हाँ, साक्षी के साथ ही पढ़ती हैं। दोनों बहुत अच्छी बच्चियाँ हैं और पढ़ने में भी होशियार हैं। स्कूल में कोई न कोई पोजीशन लेकर आती हैं।'' मम्मी बताने लगी तो पापा के चेहरे का रंग बदलने लगा था।

''क्या बात कर रही हो! तुम उनके मम्मी–पापा को जानती हो?'' ''हाँ, मैं जानती हूँ और उनसे मिल भी चुकी हूँ।'' ''कहाँ? कैसे?'' वे एक साँस में पूछ बैठे थे। ''वे तो सामने की झुग्गी–झोपड़ी वाली गन्दी बस्ती में...।'' ''हाँ, वहीं रहते हैं। उनकी माँ अच्छी पढ़ी–लिखी है और पिता भी कुछ अक्षर ज्ञान रखते हैं। माँ झाड़ू पोंछा करने और बर्तन माँजने आसपास के घरों में जाती है और पिता दिहाड़ी पर काम करते हैं। दोनों छोटा–मोटा काम करते हैं लेकिन चाहते हैं कि उनकी बेटियाँ पढ़ लिखकर जीवन में आगे बढ़कर उनका नाम रोशन करें।'' ''अच्छा!'' –पापा बोले।

''हाँ, इसलिए जी–तोड़ मेहनत करते हुए वे अपनी बेटियों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रहे हैं। शालू और नैना साक्षी की अच्छी सहेलियाँ हैं। उसे बहुत चाहती हैं और उसका पूरा खयाल भी रखती हैं। पिछली बार वह सड़क पर गिर पड़ी थी तब वे दोनों ही उसे घर पहुँचा गई थीं।''

''ओह! मैं तो उनके बारे में बहुत ही गलत सोच रहा था। सॉरी बेटा साक्षी! तुम्हारी सहेलियाँ सचमुच बहुत अच्छी हैं। अब जब तुम्हारी इच्छा हो तुम उनके साथ खेल सकती हो।'' ''थैंक्यू पापा!'' कहती हुई वह पापा से लिपट पड़ी थी।

''लीजिए शर्बत पी लीजिए।'' कुछ ही देर में मम्मी ने शरबत के गिलास लाकर उनके सामने रख दिए तो वे गिलास उठाकर इत्मीनान से शरबत पीने लगे थे। आज माँ–पापा के साथ साक्षी भी बहुत खुश थी क्योंकि अब वह शालू व नैना के साथ खुलकर खेल सकती थी।

महावीर रवांल्टा

मोल्टाड़ी पुरोला उतरकाशी (उत्तराखंड)

यहाँ दिए वाक्यों में एक रिक्त स्थान है जिसमें चार अक्षरों का ऐसा शब्द भरना है जिसका दूसरा व चौथा अक्षर समान हो, साथ ही ध्यान रहे कि पहला व तीसरा अक्षर भिन्न हो।

(1) स्कूल के ....नशीले पदार्थ की बिक्री पर रोक है।

(2) संचार की आधुनिक.............के कारण आज दुनिया मुट्ठी में समा गई है।

(3) इस घटना के बाद वल्लभभाई पटेल को ....कहा जाने लगा।

(4) अंधेरी रात में सितारों की .... बहुत ही मनमोहक होती है।

(5) ....की पत्तियाँ छूने पर मुरझा जाती है।

(6) जून–जुलाई में ....के सक्रिय होते ही सब ओर खुशियाँ छा जाती है।

(7) पुलिस ने आरोपी को थाने में बुलाकर.......... ....की।

(8) दीपावली का त्योहार पूरे देश में ....से मनाया जाता है।

(9) तब उसकी उम्र ....12 वर्ष रही होगी।

(10) इतने में एक ....आदमी अपनी कीमती कार से उतरा।

(11) अर्पित अपनी...............से गणित के कठिन सवाल भी हल कर लेता है।

(12) बारात के खाने में हमें ....मजा आया।

(13) तुम ....यह दो सौ रुपये रख लो, बाकी हिसाब बाद में देख लेंगे।

(14) ....जगह पर कभी अकेले नहीं जाना चाहिए।

(15) आजकल आन्दोलन के दौरान ....की घटनाएँ बहुत होने लगी है।

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

बच्चों का देश के प्रकाशन के सम्बन्ध में सूचना

फार्म – 4

(नियम 8 देखिए)

प्रकाशन स्थान	:	राजसमन्द (राजस्थान)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)	:	नहीं
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
मुद्रक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)	:	नहीं
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)	:	नहीं
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)

मैं संचयशील जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक 31 मार्च, 2024

संचयशील जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

आओ जानें हमारा लोकतन्त्र–3

लोकतान्त्रिक मू

लोकतन्त्र में सरकार उस राजनैतिक दल की बनती है जिसके पास जनता का सर्वाधिक समर्थन हो। लेकिन जब एक बार सरकार बन जाती है तब वह सरकार सबकी होती है। उनकी भी जिन्होंने उस दल के समर्थन में अपना मत दिया हो तथा उनकी भी जिन्होंने उनके विरोध में मत दिया है। इसका अर्थ यह है कि सरकार बनने के बाद भी कुछ लोग सरकार के कामों एवं उसकी नीतियों का विरोध कर सकते हैं। भारत का लोकतन्त्र और हमारा संविधान जनता को यह अधिकार देता है कि वह सरकार की उन नीतियों का विरोध कर सके, जिन्हें वह पसन्द नहीं करती। हालाँकि यह आवश्यक है कि विरोध करने का तरीका कानून के अनुरूप होना चाहिये, अहिंसक होना चाहिये। विरोध का अर्थ यह नहीं कि लोग तोड़–फोड़ करें, देश की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचायें या हिंसा का रास्ता अपना लें।

आन्दोलन से मिला समाधान

आपने अपने गाँव या शहर में, टेलीविजन पर या अखबारों में लोगों को जुलूस निकालते, नारे लगाते, धरना देते अवश्य देखा–सुना होगा। ये लोग सरकार की किसी नीति का या सरकार द्वारा बनाये किसी कानून का विरोध कर रहे होते हैं। ये मुद्दे कभी स्थानीय स्तर के होते हैं तो कभी राष्ट्रीय स्तर के होते हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ वर्ष पहले आपने किसान आन्दोलन के बारे में सुना होगा। यह आन्दोलन एक साल से अधिक चलता रहा और दिल्ली जाने वाले अनेक रास्तों पर हजारों किसान धरना देते रहे। वे सड़क के किनारे ही सोते और वहीं खाना बनाकर खाते। उनका मानना था कि सरकार द्वारा बनाये गये कृषि कानून किसानों के हित में नहीं हैं। सरकार को अन्ततः मजबूर होकर इन कानूनों को वापस लेना पड़ा था। जब यह आलेख लिखा जा रहा है तब पंजाब, हरियाणा क्षेत्र में हजारों किसानों द्वारा फिर एक नये आन्दोलन की शुरूआत हो चुकी है।

विपक्ष द्वारा विरोध

इसी प्रकार विपक्षी राजनीतिक दल भी सरकार के उन कामों का विरोध करते हैं जो उनकी दृष्टि से देश की जनता के हित में नहीं होते हैं। वे लोकसभा, राज्य सभा अथवा राज्यों की विधानसभाओं में तो अपनी बात कहते ही हैं, बड़ी–बड़ी सभायें और रैलियाँ भी करते हैं जिनमें हजारों–लाखों लोग उपस्थित रहते हैं। समाचार पत्र, टीवी चैनलों और सोशल मीडिया के प्रतिनिधियों को बुलाकर प्रेस वार्ता की जाती है। इनमें विरोध करने वाले अपना पक्ष रखते हैं और मीडिया के सवालों का जवाब भी देते हैं।

कई बार विरोध प्रदर्शन बड़े आन्दोलन का रूप भी ले लेते हैं और उन्हें रोकने के लिये पुलिस व प्रशासन द्वारा शक्ति का उपयोग व कड़ी कार्रवाई भी की जाती है। समझाइश व बातचीत से जब समाधान नहीं निकलता तब कभी–कभी लाठीचार्ज करना, आँसू गैस के गोले दागना, रबर

ूल्य और अभिव्यक्ति की आजादी

बुलेट चलाना या पानी की बौछार करना जैसे तरीके एकत्रित जनता को तितर–बितर करने के लिये काम में लिये जाते हैं। इससे मची भगदड़ में अनेक लोग घायल भी हो जाते हैं। कभी–कभी तो नौबत गोली चलाने तक पहुँच जाती है जिससे कई लोगों को जान से हाथ धोना पड़ता है।

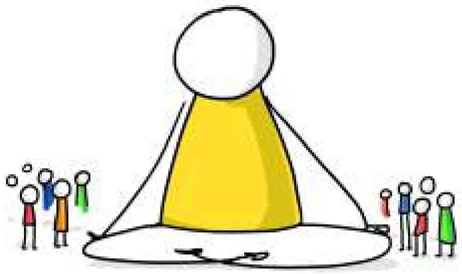

व्यक्ति के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों का महत्व
Importance of democratic values for Individual

- आग्रह–पूर्वाग्रह से बचाव
- मानसिक शान्ति
- विचारों व व्यवहार में परिपक्वता
- सभी से सद्भावपूर्ण सम्बन्ध
- आदर्श व्यक्तित्व विकास में सहायक
- परिवार व समाज में प्रतिष्ठा

- Free from Prejudice
- Mental Peace
- Maturity in thought and behaviour
- Friendly relation with all
- Helpful in developing an ideal personality
- Prestige in Family and the Society

आन्दोलन और सरकार

सरकार के पास ताकत होती है कि वह विरोध प्रदर्शन को किसी भी तरीके से रोक सकती है। लेकिन लोकतन्त्र में यह आवश्यक है कि जनता द्वारा शांतिपूर्ण तरीके से किये जा रहे विरोध प्रदर्शनों को सरकार बल के उपयोग से न रोके बल्कि उनकी बातों को धैर्य के साथ सुनकर जनता की समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयास करे। सरकार की कड़ाई से डरकर यदि जनता विरोध जताना ही बन्द कर दे तो इससे लोकतन्त्र कमजोर होता है और शासन चलाने वालों को अपनी मनमर्जी चलाने का मौका मिल जाता है। हाँ, यदि कोई कानून अपने हाथ में लेता है या हिंसा का सहारा लेता है (जैसा कि कुछ आतंकवादी समूह करते हैं) तब सरकार द्वारा कड़ी से कड़ी कार्रवाई को सही ठहराया जा सकता है।

एक मजबूत लोकतन्त्र के लिए एक मजबूत विपक्ष भी आवश्यक होता है जो समय–समय पर सरकार की कमियों की ओर इशारा कर सके और उन्हें सही रास्ते पर चलने के लिये मजबूर कर सके। इसी प्रकार मीडिया को भी लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ माना गया है, उसका भी यह दायित्व होता है कि वह गलत को गलत और सही को सही कहने का साहस रखे तथा जनता को निष्पक्ष तरीके से सही सूचना उपलब्ध कराये।

यदि किसी सरकार द्वारा भय पैदाकर जनता को अपनी बात कहने से रोका जाये अथवा दंडित किया जाये तो इससे लोकतन्त्र कमजोर होता है और देश तानाशाही की ओर बढ़ता है।

– संचय जैन

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट

राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के परिणाम

Drawing Competition

1st - Gyanshala Bhubneshwar (Odisha) **Kritika Gupta,** Class- 6
2nd - South Point School, Guwahati (Assam) **Tanushree Mishra,** Class- 8
3rd - Pi World School, Forbesganj (Bihar) **Mayank Raj,** Class- 7

1st - Saraswati Bal Mandir, Rajauri Garden (Delhi) **Yashita Bansal,** Class- 9
2nd - Stanford International School, Ujjain (Madhya Pradesh) **Sonali Anjana,** Class- 11
3rd - Nagaon Bengali Girls High School, Nagaon (Assam)**SUNANDA PODDAR,** Class- 10

Essay Writing Competition

1st - Sakthi Public School (Tamil Nadu) **Monish C.U,** Class- 8
2nd - South Point School, Guwahati (Assam), **Rudrani Chakraborty**, Class - 8
3rd - St.Mary's International School (Karnataka), **Zaima Dahiya,** Class - 8

1st - Sakthi Public School (Tamil Nadu), **A.V Roshini,** Class- 11
2nd - Gurukul English Medium Higher Secondary School Baloda Bazar, Chhattisgarh, **SHRIYA MISHRA,** Class- 10
3rd - Guru Nanak Higher Secondary School, GTB Nagar Sion (Maharashtra) **Harvinder Kaur ,** Class- 11

Poetry Recitation Competition

1st - Maharishi Vidya Mandir Sr. Sec.School (Tamil Nadu), **Arshitha S,** Class- 7
2nd - Platinum Valley International School, Uttar Pradesh, **Riddhi Agrawal,** Class- 6
3rd - Terapanth Gyanshala, Kharupetia (Assam), **Harshika Surana,** Class - 8

1st - Adarsh Public school (Delhi), **Gunjan Jewel Dutta,** Class- 9
2nd - PI World SchooL, Forbesganj (Bihar), **Siddhi Dhanuka,** Class- 9
3rd - Sakthi Public School (Tamil Nadu), **V.S Rahul,** Class- 9

Speech Competition

1st - J.V.S.English School (Karnataka), **Maitreyi K Nithyananda,** Class - 8
2nd - Shree Jain Vidyalaya (West Bengal), **Soumyashree chakraborty,** Class- 8
3rd - K.M.Public(Sr.Sec.) School (Haryana), **Drishti (Eng),** Class- 5

1st - Bharti Public School (Delhi), **Sakshi Kumari,** Class- 9
2nd - K.M.Public(Sr.Sec.)School (Haryana), Nancy, Class- 11
3rd - Hanuman balika vidyalaya (West Bengal), **Sanjana Singh(Hanuman)**, Class-12

Solo Singing

1st - Sir Padampat Singhania School, Kota (Rajasthan), **Sameeha Bharti,** Class-
2nd - South Point School, Guwahati (assam), **Nysa Sharma,** Class- 8
3rd - Ambuja Vidya Peeth Baloda Bazaar (Chhattisgarh), **Samarth Mishra,** Class- 8

1st - Sir Padampat Singhania School, Kota (Rajasthan), **Zaid Ali Bharti,** Class- 11
2nd - Stanford International School, Ujjain (Madhya Pradesh) **Sonali Anjana,** Class- 11
3rd - Orientel Public School Ambikapur (Chhattisgarh), **Gaurav Shukhla**, Class- 12

Group Singing

1st - Shardayatan English Medium, Gujarat
Akshat Mistry, Aarav Patel, Rajvi Chahwala, Fairy Jariwala, Chaahat Patel
2nd - BAKHSHI'S SPRINGDALES SCHOOL, Chhawani, Kota
Jiya Rawal, Harsimar Kaur, Lavish Jain, Rytham Preethi Kaur, Megha Nathdwara
3rd - Mvm Polachery, Tamil Nadu
Pratheeka M, L. Krithilaya, Abinaya J, Haasini V, Hanshika V

1st - Sir Padampat Singhania School, Kota
Aayush Gupta, Shyam Gupta, JANUEL ALTAMASH, Tavishi sharma, Ishika Bhardwaj
2nd - Arya Gurukul, Maharashtra
Aparna Nair, Apurva Kalebere, Raima Mukherjee, Tejal Jawale, Klarissa Kori
3rd - Aditya Birla Higher Secondary School, Sidhi (Madhya Pradesh)
Saumya Tiwari, Nitin Mishra, Anshika Tiwari, Anjali Mishra, Sangharsh Tiwari

प्रेरक वचन

जो अप्राप्त है, उसे पा लेना कठिन नहीं है। परन्तु जो प्राप्त था, उसे खोकर फिर पाना अत्यन्त कठिन है।

❖

प्रतिभा जाति पर निर्भर नहीं करती, जो परिश्रमी है, वही सब कुछ प्राप्त करता है।

❖

कला मनुष्य के हृदय और बुद्धि को प्रभावित करके ही उसके कर्म को प्रभावित करती है।

❖

ऊँचाई अच्छी है, पर उस पर धूप, आँधी, पानी और भी अधिक वेग से आक्रमण करते हैं।

❖

कीचड़ से कीचड़ को धो सकना सम्भव नहीं है उसे धोने के लिए निर्मल जल ही चाहिए।

महादेवी वर्मा

दीपक बन जाऊँ

दीपक जैसा मैं बन जाऊँ,
देकर रोशनी तिमिर भगाऊँ।
दुःख में सबके काम मैं आऊँ,
चेहरे पर मुस्कान खिलाऊँ।

घर–आँगन का बनूँ उजाला,
स्थान रहे ना कोई काला।
जगमग–जग को रोशन कर दूँ,
सबके मन को हर्षित कर दूँ।

दीप आरती का बन जाऊँ
मन में उजाला भर पाऊँ।
झोपड़ी का बनूँ सितारा,
दीन–दुःखी का बनूँ सहारा।

डॉ. ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'
सिरसा (हरियाणा)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

उफ! परीक्षा

स्कूल की वार्षिक परीक्षा नजदीक थी। सभी बच्चे पढाई में लगे थे। जिन बच्चों ने सालभर नियमित अध्ययन किया था वे निश्चिन्त थे क्योंकि उन्हें सब याद था। किन्तु कुछ बच्चे जिन्होंने घर पहुँचते ही बैग एक तरफ रख दिया था, कल पढ़ लेंगे, परीक्षा आयेगी तब पढ़ लेंगे, सोचकर टाल–मटोल कर रहे थे, वे सभी बच्चे चिन्ता में थे। उनके माता–पिता भी परेशान थे। बच्चों को पढ़ाई करने की सलाह दे रहे थे। स्कूल टीचर ने भी सभी अभिभावकों को बुलाकर बच्चों की खूबियाँ और कमियाँ बता दी थी।

परीक्षा के डर से कुछ बच्चों को रिसेस में टिफिन खाने में भी आनन्द नहीं आ रहा था। बच्चे अपने–अपने समूह में बैठ आपस में पढ़ाई की ही बातें कर रहे थे। किसने कितना रिवीजन कर लिया है? कितना बाकी है? एक दूजे को बता रहे थे। क्लास में भी रिवीजन चल रहा था और सब तरफ परीक्षा का माहौल था।

दुर्गा आठवीं कक्षा की छात्रा थी। वह एक माह बाद आज स्कूल आई थी। टाइफाइड बुखार के कारण स्कूल आने में असमर्थ रही। उसे इम्तिहान की तैयारी की चिन्ता सता रही थी क्योंकि उसकी काफी पढ़ाई छूट गई थी। कक्षा अध्यापिका ने उसे दूसरे विद्यार्थियों से नोटबुक लेकर छूटी हुई सारी पढ़ाई पूरी करने को कहा। दुर्गा ने अपने पास बैठने वाले पार्थ से नोटबुक माँगते हुए कहा– ''हे पार्थ! मुझे एक दो दिन के लिए तुम्हारी नोटबुक दे दो। मैं जैरोक्स करवा कर तुरन्त वापस कर दूँगी।'' किन्तु उसने देने से मना कर दिया। दुर्गा ने अपने आगे बैठने वाली पार्वती से पूछा, उसने भी आजकल कहकर टाल दिया। अपने पड़ौस में रहने वाली उमा से प्रार्थना की तो उसने भी ''अरे यार! मुझे भी तो पढ़ना है।'' कहकर हाथ झाड़ लिए।

उसने रिसेस में निकलने से पहले सभी सहपाठियों से निवेदन किया किन्तु सब बच्चे अनसुना कर चल दिए। दुर्गा रूआँसी हो गई। रमा को उस पर दया आ गई। रमा ने उसकी मदद करने की ठानी। रमा कक्षा की सबसे होशियार छात्रा थी। उसने कहा तुम चिन्ता मत करो। मैं कल सभी नोटबुक की जैरोक्स करवा कर लाऊँगी और तुम्हें दे दूँगी। दोनों रिसेस में बाहर आकर टिफिन खाने लगी। बच्चे आपस में बतिया रहे थे।

मेरी मम्मी ने किसी को भी नोटबुक देने से मना किया है। वह पढ़कर मुझसे ज्यादा नम्बर ले आयेगी फिर हमें भी तो पढ़ना है। परीक्षा सिर पर खड़ी है। रमा क्लास की सबसे होशियार स्टूडेंट थी फिर भी उसने अपनी नोटबुक देने के लिए हाँ कर दी।

रमा जैसे ही घर पहुँची। माँ के हाथ की गर्म रोटी खाते–खाते माँ को सारी बात बताई और अपनी नोटबुक की नकल देकर दुर्गा की मदद करने के निर्णय के बारे में बताया।

माँ ने उसके निर्णय का स्वागत करते हुए कहा– ''शाबाश बेटी! उसकी मदद करके तुमने अच्छा किया। मैं शाम सब्जी खरीदने के लिए जाऊँगी। पास वाले जैरोक्स सेंटर से कोपी करवा लाऊँगी।'' ''थैंक्स माँ! आप कितनी अच्छी हैं।''

अगले दिन रमा अपने नोट्स की जैरोक्स नकल दुर्गा को थमा देती है। साथ ही हफ्ते में दो दिन अपने घर बुलाकर रिवीजन करने के लिए निमन्त्रण देती है। परीक्षा सिर पर होने के बावजूद भी रमा दुर्गा के लिए समय निकालती है। ''रमा! तुमने मुझे अपने नोट्स दिये, वही बहुत है। तुम अपना समय खराब मत करो।'' दुर्गा ने कहा। ''अरे पगली! तुम्हें पढ़ाने से भी तो मेरा रिवीजन होगा।'' ''ऐसा है तो ठीक है। मैं आज से ही आ जाती हूँ।''

परीक्षा में सभी बच्चों ने अपनी स्मरण शक्ति और मेहनत का परिचय दिया। रिजल्ट आया। रमा इस बार भी कक्षा में सर्वाधिक अंक लेकर अव्वल रही। दुर्गा भी अच्छे अंक लेकर पास हो गई।

स्कूल के वार्षिक समारोह में रमा को सर्वाधिक अंक लाने के लिए फिर से पुरस्कार मिला। साथ ही सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी का सम्मान भी मिला। रमा को पुरस्कार थमाते हुए टीचर ने रमा की अच्छाई के बारे में सभी छात्र–छात्राओं को बताते हुए कहा– ''रमा ने अपने नोट्स देकर दुर्गा की मदद की, इतना ही नहीं, साथ ही रिवीजन करने में भी सहायक बनी। प्यारे बच्चो! ज्ञान बाँटने से बढ़ता है। घटता नहीं है। तुम सबको जरूरत पड़ने पर एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। तुम सब एक ही किताब पढ़कर परीक्षा में सवालों के जबाव लिखते हो। कोई ज्यादा अंक लाता है, कोई कम। पूछो क्यों? क्योंकि सबकी याद करने की शक्ति अलग होती है। सबकी सूझबूझ अलग होती है।'' प्रिंसिपल ने सभी बच्चों को एक दूसरे की मदद करने की सीख दी और बताया कि बाँटने से ज्ञान बढ़ता है। जो बच्चे कम अंक लाये थे, उन्हें मेहनत से पढ़ाई करने तथा हर रोज रिवीजन करने की सलाह दी। इस घटना के बाद रमा और दुर्गा दोनों अच्छी दोस्त बन गई थी।

डॉ. मीरा रामनिवास
गांधीनगर (गुजरात)

आओ पढ़ें : नई किताबें

जीवनी विधा की इस पुस्तक में 15 विशिष्ट व्यक्तियों की प्रेरक जीवनी को संवादशैली में प्रस्तुत किया गया है। इनमें महाराणा प्रताप, पन्नाधाय, हाडी रानी, चाणक्य, शिवाजी के साथ नीरा आर्य, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर, हेमू कालानी को भी स्थान मिला है। सभी जीवनियों में नानी बच्चों से सहज बातचीत करते हुए उनके प्रश्नों व जिज्ञासा को शान्त करती है। सुन्दर आवरण एवं स्वच्छ मुद्रण की यह सचित्र पुस्तक बाल पाठकों के लिए रोचक, प्रेरक एवं ज्ञानवर्द्धक है।

पुस्तक का नाम : नानी की चौपाल **लेखक :** डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'
मूल्य : 200 रुपये **पृष्ठ :** 80 **संस्करण :** 2023 **प्रकाशक :** साहित्यागार, जयपुर (राजस्थान)

व्हाट्सएप कहानी

सेठ घनश्याम के दो पुत्रों में जायदाद और जमीन का बँटवारा चल रहा था और एक चार बेड रूम के घर को लेकर विवाद गहराता जा रहा था। एक दिन दोनों भाई मरने मारने पर उतारू हो चले, तो पिता जी बहुत जोर से हँसे। पिताजी को हँसता देखकर दोनों भाई लड़ाई को भूल गये और पिताजी से हँसी का कारण पूछा। पिताजी ने कहा– ''इस छोटे से जमीन के टुकड़े के लिए इतना लड़ रहे हो। छोड़ो इसे, आओ मेरे साथ एक अनमोल खजाना दिखाता हूँ मैं तुम्हें!

पिता घनश्याम जी और दोनों पुत्र पवन और मदन रवाना हुए। पिताजी ने कहा– ''देखो यदि तुम आपस में लड़े तो फिर मैं तुम्हें उस खजाने तक नहीं लेकर जाऊँगा और बीच रास्ते से ही लौटकर आ जाऊँगा।'' अब दोनों पुत्रों ने खजाने के चक्कर में एक समझौता किया कि चाहे कुछ भी हो जाये पर हम लड़ेंगे नहीं, प्रेम से यात्रा पर चलेंगे।

गाँव जाने के लिए एक बस मिली पर सीट दो ही मिली और वे तीन थे। अब पिताजी के साथ थोड़ी देर पवन बैठा तो थोड़ी देर मदन। ऐसे चलते–चलते लगभग दस घंटे का सफर तय किया, तब गाँव आया। घनश्याम जी दोनों पुत्रों को लेकर एक बहुत बड़ी हवेली पर गये। हवेली चारों तरफ से सुनसान थी। घनश्याम जी ने देखा कि हवेली में जगह–जगह कबूतरों ने अपना घोंसला बना रखा है, तो घनश्याम वहीं बैठकर रोने लगे।

पुत्रों ने पूछा– ''क्या हुआ पिताजी आप रो क्यों रहे हैं ?'' रोते हुए उस वृद्ध पिता ने कहा– ''जरा ध्यान से देखो इस घर को, जरा याद करो वो बचपन जो तुमने यहाँ बिताया था। तुम्हें याद है बच्चो, इसी हवेली के लिए मैंने अपने बड़े भाई से बहुत लड़ाई की थी, ये हवेली तो मुझे मिल गई पर मैंने उस भाई को हमेशा के लिए खो दिया। क्योंकि वो दूर देश में जाकर बस गया और फिर वक्त बदला, एक दिन हमें भी ये हवेली छोड़कर जाना पड़ा। अच्छा तुम ये बताओ बेटा कि जिस सीट पर हम बैठकर आये थे क्या वो बस की सीट हमें मिल गई? और यदि मिल भी जाती तो क्या वो सीट हमेशा–हमेशा के लिये हमारी हो जाती? मतलब की उस सीट पर हमारे सिवा और कोई न बैठ सकता।''

दोनो पुत्रों ने एक साथ कहा– ''ऐसा कैसे हो सकता है? बस की यात्रा तो चलती रहती है और उस सीट पर सवारियाँ बदलती रहती है। पहले हम बैठे थे। आज कोई और बैठा होगा और पता नहीं, कल कोई और बैठेगा और वैसे भी उस सीट में क्या धरा है जो थोड़ी–सी देर के लिए हमारी है।''

पिताजी पहले हँसे और फिर आँखों में आँसू भरकर बोले– ''देखो! यही मैं तुम्हें समझा रहा हूँ कि जो थोड़ी देर के लिये तुम्हारा है, तुमसे पहले उसका मालिक कोई और था, थोड़ी–सी देर के लिए तुम हो और थोड़ी देर बाद कोई और हो जायेगा। बस बेटा एक बात ध्यान रखना कि इस थोड़ी–सी देर के लिये कहीं तुम अपने अनमोल रिश्तों की आहुति न दे देना। यदि पैसों का प्रलोभन आये तो इस हवेली की इस स्थिति को देख लेना कि अच्छे–अच्छे महलों में भी एक दिन कबूतर अपना घोंसला बना लेते हैं। बेटा! मुझे यही कहना था कि बस की उस सीट को याद कर लेना जिसकी रोज सवारियाँ बदलती रहती है। उस सीट के खातिर अनमोल रिश्तों की आहुति न दे देना, जिस तरह से बस की यात्रा में तालमेल बिठाया था, बस वैसे ही जीवन की यात्रा में भी तालमेल बिठाते रहना।'' दोनों पुत्र पिताजी की बात का मतलब समझ गये और पिता के चरणों में गिरकर रोने लगे।

मेरा देश : गाँव विशेष–15

कोसली

हर परिवार ने दिया एक फौजी

प्यारे बच्चो! वैसे तो हम सब अच्छे नागरिक, डॉक्टर, वकील, पर्यावरणविद्, पत्रकार, शिक्षक आदि बनकर भी देशहित के लिए काफी कुछ कर सकते हैं लेकिन एक फौजी तो देश के लिए मर मिटने को तत्पर रहता है। जाहिर है हम सब के दिल में फौजियों के प्रति एक विशेष सम्मान रहता है। आज हम आपको बता रहे हैं एक ऐसे गाँव के बारे में जहाँ के लगभग हर परिवार ने देशसेवा के लिए कम से कम एक फौजी जरूर दिया है।

हर रैंक के सैनिक

हरियाणा के रेवाड़ी शहर से करीब 35 किलोमीटर दूर स्थित है कोसली गाँव। प्रथम विश्व युद्ध से लेकर आज तक इस गाँव से अब तक हजारों सैनिक भारतीय सेना में भर्ती हो चुके हैं। इस गाँव में मात्र 6000 घर हैं और यहाँ की जनसंख्या 14000 है। यहाँ के ज्यादातर परिवारों से कम से कम एक व्यक्ति सेना में अपनी सेवाएँ दे चुका है या दे रहा है। हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा दूसरा गाँव होगा। दिलचस्प बात यह है कि यहाँ से सिर्फ सिपाही ही नहीं सेना के हर रैंक के सैनिक निकले हैं। सिपाही से लेकर मेजर जनरल तक। वर्तमान में यहाँ के 6 ब्रिगेडियर रैंक के अफसर और 30 कर्नल हैं। यहाँ के वीरों को महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र और ब्रिटिश जमाने में मिलिट्री क्रॉस जैसे प्रतिष्ठित सम्मान भी मिल चुके हैं।

प्रथम विश्व युद्ध से आज तक सक्रिय

यहाँ के जवानों ने प्रथम विश्व युद्ध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। तब से आज तक हर बड़े युद्ध में उनकी सहभागिता रही है। यहाँ तक कि इस गाँव के सिपाहियों ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में भी अपनी सेवाएँ दी थी। इस फौज में सेवाएँ दे चुके मंगल सिंह भी जीवित हैं और गाँव में रहते हैं। कहते हैं, प्रथम विश्व युद्ध में कोसली के 247 निवासी युद्ध के मैदान में गए थे जिनमें से 6 शहीद हो गए थे।

मठ और स्मारक में दर्ज हैं नाम

गाँव में एक प्राचीन मठ है जहाँ समस्त ग्रामवासी समय–समय पर इकट्ठा होते हैं। गाँव के शहीदों का नाम मठ की दीवारों पर अंकित होने के साथ–साथ यहाँ एक युद्ध स्मारक भी बनाया गया है। इसकी आधारशिला 1984 में तत्कालीन प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने रखी थी। यहाँ सफेद संगमरमर पर शहीदों के नाम लिखे गए हैं। यहाँ एक सैनिक विश्रामगृह भी है। गाँववासियों ने गाँव के गौरवमयी इतिहास और सैनिक परम्परा का विस्तृत विवरण देने वाली एक पुस्तक भी प्रकाशित करवाई है।

शिक्षा का असर

गाँव के लोगों का सेवा के प्रति झुकाव होने की वजह, यहाँ शिक्षा व जागरूकता का समुचित प्रचार–प्रसार है। यहाँ बहुत पहले से ही स्कूल खुल गए थे जिससे शिक्षा का स्तर अच्छा रहा। 1926 में यहाँ पहला मिडिल स्कूल और 1928 में हाई स्कूल खुल गया था। स्कूल में बच्चों के इकट्ठा होने, अच्छी शिक्षा मिलने और परस्पर विचार विनिमय के कारण देशभक्ति का माहौल तैयार हो गया। साथ ही यहाँ के लोगों की मजबूत कद काठी भी इसमें सहायक सिद्ध हुई ।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

आनन्दी की होली

होली की सुबह आनन्दी अपने कमरे में बैठी पढ़ रही थी। आनन्दी को होली खेलना कतई पसन्द न था। रंगों से चेहरे पोतना उसे अच्छा नहीं लगता था। इसी कारण वह प्रत्येक होली के दिन खुद को अपने कमरे में बन्द कर लेती थी और पढ़ने व टीवी देखने में पूरा दिन गुजार देती थी ताकि उसकी सहेलियाँ या कोई अन्य जान पहचान वाला उसे जबरन रंग न पोत जाए। उसकी सहेलियाँ तनु, मीनाक्षी, प्रीति और नैनसी को उससे यही शिकायत रहती थी कि वह उनकी तमाम खुशियों में तो शरीक होती है मगर मस्ती के त्योहार होली में नहीं।

सुबह के दस बज चुके थे। तभी आनन्दी के कमरे में रखे फोन की घंटी बजी। उसने फोन उठाया तो फोन उसकी सहेली प्रीति का था। वह काफी सहमी आवाज में बोल रही थी– ''आनन्दी...मेरे पाँव में काँच लग गया है। ओह! मुझसे चला भी नहीं जा रहा और खून बह रहा है। घर में कोई नहीं...प्लीज तुम मेरे घर आ जाओ, प्लीज...तुम्हारी हैल्प चाहिए। ओह!!!''

प्रीति का घर पास ही में था। आनन्दी फौरन प्रीति के घर की तरफ दौड़ी। जैसे ही वह उसके आँगन में प्रविष्ट हुई, कितने हाथों ने एक साथ पीछे से उसका मुख रंगों से पोत दिया और साथ ही जानी पहचानी आवाजें गूँजने लगीं– ''होली है भई होली है...बुरा न मानो होली है।''

अब तक आनन्दी समझ गई थी कि प्रीति ने उसे झूठ बोल कर घर बुलाया है ताकि बाकी की सहेलियों के साथ मिलकर उसे भी होली का रंग लगाया जाए। वह तिलमिला उठी और मुख में गया गुलाल थूकते हुए बिना कुछ कहे वहाँ से घर लौट आई। फिर बिस्तर पर लेट कर सुबकने लगी। वह अपनी सहेलियों की इस चाल से सख्त खफा थी। उसकी सहेलियाँ उसके पीछे–पीछे उसके घर पहुँची। आनन्दी ने उन्हें स्पष्ट कह दिया– ''तुम सबने मेरी भावनाओं के साथ

बूझो तो जानें

1

गुझिया, पेड़ा, मीठी खुरमी,
जी भर कर हम खाते।
रंगों का त्योहार अनोखा,
मिलकर खूब मनाते।

2

प्रथम हटे तो दल बन जाता,
श्वेत श्याम है रंग।
मध्य हटे तो बाल बनूँ मैं,
अजब अनूठे ढंग।

3

आसमान में अर्धमाल सा,
निकल खूब मैं आता।
सात रंगों का सुन्दर रूप,
बोलो क्या कहलाता?

4

मेरा दुःख हरदम हर लेती,
सुनो गौर से बात।
प्रथम गुरु वह कहलाती है,
सदा निभाती साथ।।

5

अंधकार को दूर भगाकर,
उजियारा फैलाते हैं।
राह सत्य की हमें दिखाकर,
घर-घर आदर पाते हैं।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, कालपी जालोन (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

खिलवाड़ किया है। मैं तुम सब को कभी माफ नहीं करूँगी। तुम अभी यहाँ से चली जाओ।''

सभी सहेलियों के रंगों से खिले चेहरे उदास नजर आने लगे थे। उनका इरादा तो केवल अपनी सहेली को किसी तरह खुशी में शरीक करना था न कि उसका दिल दुखाना। वह मौन बैठीं थी ताकि किसी तरह रूठी आनन्दी की नाराजगी कम हो जाए। यही बात आनन्दी की मम्मी को पता लगी तो वह भी बोली– ''बेटा, अब छोड़ो भी और सबको माफ कर दो। आज तो खुशियों का त्योहार है और आज के दिन यदि किसी को कुछ दिया नहीं जा सकता तो उनसे छीनना भी अच्छी बात नहीं। देखो तो तुमने इन सब सहेलियों की मुस्कराहट छीन ली जो कि तुम्हें अपनी खुशी में शामिल करना चाहती थीं।'' माँ की बात का आनन्दी के मन पर असर हुआ। उसने एक नजर सब सहेलियों की तरफ देखा जो सिर झुकाए उदास मुद्रा में बैठीं थी। उसे अहसास हुआ कि वाकई उसे अपनी सहेलियों का दिल नहीं दुखाना चाहिए।

''तुम सब ने सुना नहीं मैंने क्या कहा? सब बाहर जाओ।'' यकायक आनन्दी ने अपनी सहेलियों से फिर कहा। चारों सहेलियाँ एकदम घबरा कर बाहर जाने लगीं तो आनन्दी बोली– ''और मेरे साथ होली खेलो...मैं भी आज होली खेलूँगी।'' तभी मुस्कराते हुए आनन्दी ने अपनी बात पूरी की। सभी सहेलियाँ एक दूसरे का मुँह ताकने लगीं। उनके मुरझाए चेहरे रंगों की भाँति फिर से खिल उठे थे। उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि आनन्दी और होली? फिर क्या था सभी सहेलियों ने आनन्दी के आँगन में खूब होली मनाई और उसकी मम्मी के हाथों के बनाए पकवान भी चखे।

हरिन्दर सिंह गोगना
पटियाला (पंजाब)

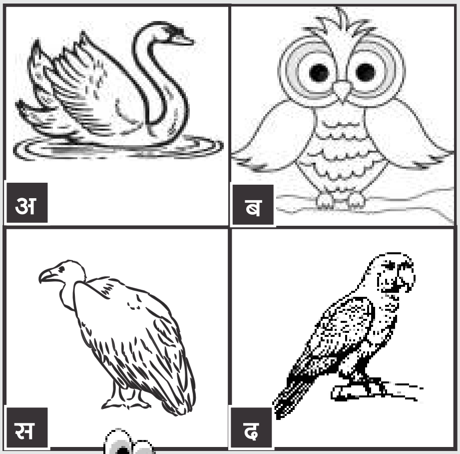

दस सवाल दस जवाब

(1) इन चित्रों को पहचानिये।

(2) पेंग्विन पक्षी का निवास स्थान कहाँ है ?

(3) किस पक्षी को शान्ति का प्रतीक माना जाता है।

(4) कौनसा पक्षी घोंसला नहीं बनाता?

(5) विश्व में सबसे बड़ा पक्षी कौनसा है?

(6) राजस्थान का राज्य पक्षी कौनसा है?

(7) किस पक्षी को 'बुनकर पक्षी' कहा जाता है?

(8) न्यूजीलैंड का राष्ट्रीय पक्षी किसे माना गया है?

(9) भारत का सबसे बड़ा चिड़ियाघर कहाँ है?

(10) पक्षी दिवस कब मनाया जाता है?

(उत्तर इसी अंक में)

जरा हँस लो

- विद्यालय से घर आकर राजीव मुर्गा बना।
  तो माँ ने पूछा – ''बेटा! यह क्या कर रहे हो ?
  राजीव ने कहा – ''माँ आपने ही तो कहा है कि विद्यालय का काम घर आकर किया करो।

- माँ – पिंकी तुम्हें जन्मदिन पर सबसे अच्छा उपहार कौनसा मिला ?
  पिंकी– यह बाजा।
  माँ – पर यह सबसे अच्छा कैसे हुआ?
  पिंकी –क्योंकि इसे न बजाने के लिए पिताजी रोज 10 रुपये देते हैं।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

विश्व विरासत स्थल-6

एलोरा की गुफाएँ

अंजता–एलोरा की गुफाओं का नाम जुड़वाँ बच्चों की तरह साथ–साथ लिया जाता है जबकि इनके मध्य पर्याप्त दूरी है। इस आलेख में हम आपको एलोरा गुफाओं की यात्रा पर ले चलते हैं। ये महाराष्ट्र राज्य के संभाजी नगर से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। सन् 1983 में इन गुफा मंदिरों को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था। यहाँ पर कुल 34 गुफाएँ हैं जिनमें 12 बौद्ध गुफाएँ, 17 हिन्दू गुफ़ाएँ और 5 जैन गुफाएँ हैं। ये सभी गुफा मन्दिर धार्मिक और सांस्कृतिक सौहार्द की अद्भुत झाँकी प्रस्तुत करते हैं।

इन गुफाओं में कलाकारों ने पत्थरों को काटकर अपनी छैनी से अद्भुत चित्रावली उकेरने का काम किया है। विद्वानों के अनुसार राष्ट्रकूट, पल्लव और चालुक्य वंश के राजाओं ने इन गुफा मन्दिरों का निर्माण 5वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य कराया था। ये गुफाएँ दो किलोमीटर के परकोटे में फैली हुई हैं। चट्टानों की दीवारों को काटकर भव्य, सुन्दर और अद्वितीय चित्रकारी की गई है। ये विश्व की सबसे बड़ी और रहस्यमय गुफाएँ मानी जाती हैं।

एलोरा का कैलाश मन्दिर

चट्टानों को काटकर बनाये गये मन्दिरों में यह सबसे बड़ा है जो भगवान शिव को समर्पित है। यह मन्दिर अपने विशाल आकार, वास्तुकला और शिल्पकला के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। दुनिया भर में एक ही पत्थर की शिला से बनी हुई सबसे बड़ी मूर्ति यहाँ है। इस मन्दिर को बनाने में 150 साल लगे। लगभग सात हजार राज–मजदूरों ने इसके निर्माण में निरन्तर काम किया। एलोरा की ये गुफाएं सैलानियों को चकित करने वाली हैं।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

सबसे अच्छा तैराक

बबलू नाम तो लुभावना था पर, उसका काम तो हद से ज्यादा डरावना। कभी गली के कुत्ते को कानों से पकड़ कर उछाल देता, तो कभी तितली के पंख पकड़ कर सबको बताता और अगर किसी को केले के छिलके पर फर्र–फर्र फिसलते देख लिया तो नाच–नाच कर खुश होने वाला बबलू पूरे मौहल्ले में सबसे शैतान बच्चे के नाम से मशहूर था। उसकी हरकतें सबकी सोच से परे थी। कभी वह सब्जी वाले से पाँच किलो प्याज तुलवा, थैली में डलवा गायब हो जाता। तो कभी मन्दिर में आरती मशीन को शाम चार बजे ही चालू कर भाग आता।

चंचलता से भरपूर उसकी दिनचर्या का साथ देते, उसके माता–पिता और परिवारजन भी हार मान चुके थे। आँगन में लगे जामुन के पेड़ की सबसे ऊँची डाली पर जाकर घंटों छुप कर बैठ जाता, और जब घरवाले ढूँढ़ते परेशान हो जाते तो चुपके से आकर अपने कमरे में बैठकर ड्राइंग करने लगता। पढ़ने में उसकी जरा–सी भी रुचि नहीं थी। दादाजी के पास बैठकर पौराणिक कथाएँ सुनते समय उसकी तूफानी हरकतें विश्राम पाती वरना कोई न कोई उसकी शरारत का शिकार बनता रहता। दादाजी के अलावा और किसी के प्रभाव से वह मुक्त था।

दस साल की उम्र में जहाँ ज्यादातर बच्चे पढ़ाई को अपना मुख्य कर्म मान चुके थे, बबलू के लिए मस्ती की पाठशाला हमेशा चालू रहती। यूँ वह माँ के काम में भी हाथ बँटा दिया करता था, पर उसकी तेज गति का साथ निभा उसे काम में उलझाए रखना, माँ के लिए एक कठिन कार्य था। वो उसको एक मुट्ठी चावल बीनने का काम देती, तो वह उसे साफ कर उसमें कितने कंकर निकले, उनकी संख्या फटाफट बताकर माँ को थमा देता। पोंछा लगाने को कहती, तो पैर में स्केट्स बाँध दो मिनट में पूरे घर में मोप को घुमा देता, चाहे माँ को एक बार फिर से वह कार्य करना पड़े। पिता और भाई की तो वो बिलकुल नहीं सुनता था इसलिए उन्होंने उसे टोकना या कोई काम बताना ही बन्द कर दिया था। भाई उससे तीन वर्ष अधिक आयु

का होने के बावजूद स्कूल में अपनी अच्छी पढ़ाई के लिए नहीं बल्कि बबलू के भाई के रूप में पहचाना जाता था।

ग्यारह वर्ष में प्रवेश के साथ ही बबलू ने पाँचवीं कक्षा ठीक–ठीक अंकों से पास कर छठी कक्षा में प्रवेश लिया था। उसके भविष्य को लेकर चिन्तित पिता ने उसे नई साइकिल लाकर दी और स्वीमिंग क्लास में प्रवेश दिला दिया। तो अब हाल यह था कि शाम के समय वो घर का तूफानी बालक स्वीमिंग पूल में जलवे दिखाने लगा।

मात्र तीन महीने में वह शहर का सबसे अच्छा तैराक बन गया। तीन–चार घंटे साइकिल चलाने और तैराकी करने में बीतने के बाद अब घरेलू शरारतों मे थोड़ी कमी जरूर आई थी। ऊर्जा से लबरेज शरीर में अब भी थकान का स्पर्श न के बराबर था।

दादाजी के साथ एक दिन वह सरकारी डिस्पेंसरी में गया। दादाजी ने डॉक्टर को चैकअप करा दवाई ली और बिल्डिंग के बाहर आकर कुछ देर खड़े हो गए। बबलू ने उनसे प्रश्न किया कि वे क्या सोच रहे हैं तो दादाजी बोले– "बेटा! मैं सोच रहा हूँ कि इस नई बनी डिस्पेंसरी में लम्बी–चौड़ी जगह खाली पड़ी है। क्यों ना तुम इसके चारों ओर छायादार पेड़ लगा इसको हरा–भरा बनाने का काम अपने जिम्मे ले लो! कुछ सालों बाद यहाँ ज्यादा मरीज आने लगेंगे तो उनके लिए छाया की व्यवस्था हो जाएगी।"

बबलू को बात जम गई। वहाँ के डॉक्टर से बात कर तय हो गया कि कल से ही यह काम शुरू करते हैं। अगले दिन बबलू के दादाजी ने नर्सरी से नीम, शीशम, गुलमोहर के पाँच फीट ऊँचे पचास पेड़ मँगवाकर परिसर में रखवा दिए। बबलू अपने दो मित्रों के साथ स्विमिंग से पहले वहाँ रोज आता और चार–पाँच पौधे लगाकर चला जाता। डॉक्टर साहब ने कुदाल, फावड़ा और बाल्टी डिस्पेंसरी में लाकर रखवा दी थी। पास के हैण्डपम्प से वे पानी भरकर रोज पौधों को पानी पिलाते और उनको हरा लहराता देख खुश होते।

एक वर्ष में ही पौधों ने वृक्षों का रूप लेना शुरू कर दिया था और बबलू की उफनती ऊर्जा के सही इस्तेमाल ने डिस्पेंसरी आने वाले सभी लोगों के लिए सुकून भरा वातावरण निर्माण कर दिया था। महामारी के एक वर्ष में लॉकडाउन के चलते, बबलू भले ही स्कूल एक भी दिन नहीं गया पर अपने लाड़ले पौधों को पानी पिलाना एक दिन भी नहीं भूला। शरारती बबलू अब सलोना बबलू के नाम से आसपास के क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुका था।

संदीप पांडे
अजमेर (राजस्थान)

बताओ तो जानें

नीचे चित्रित 5 पंखों को ध्यान से देखकर बताओं राजहंस का दूसरा पंख कौनसा है ?

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

पढ़ो और जीतो

यहाँ दिये दस प्रश्नों के उत्तर इसी अंक की सामग्री पर आधारित है। आप पत्रिका पढ़ें और उनके सही उत्तर खोजकर एक कागज पर लिखें। अपना नाम, कक्षा, शहर व मोबाइल नं. भी इस पत्र पर लिखना है । उसका फोटो हमें व्हाट्सएप नं. 9351552651 पर **दिनांक 31** मार्च तक भेजें। सर्वश्रेष्ठ उत्तर पर पुरस्कार दिया जाएगा।

1. शासन तभी अच्छा होता है जब व्यवहार में हो..........?
2. अभिव्यक्ति की आजादी से क्या अर्थ है?
3. विश्व की एक ही शिला से बनी हुई सबसे बड़ी मूर्ति कहाँ है?
4. वह कौन सा पदार्थ है जो ठोस, द्रव और गैस तीनों अवस्थाओं में पाया जाता है?
5. अणुव्रत गीत के रचयिता कौन है ?
6. फणीश्वर नाथ रेणु ने अपना पद्मश्री सम्मान क्यों लौटाया ?
7. इस अंक की नाटिका से आपको क्या शिक्षा मिलती है?
8. शरारती बबलू ने क्या किया कि वह सलोना बबलू बन गया ?
9. भारत के सबसे अधिक शिक्षित व्यक्ति कौन थे ?
10. हरियाणा की दादी राम बाई ने क्या विशेष काम किया ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) बतख (Swan) (ब) उल्लू (Owl) (स) गिद्ध (Vulture) (द) तोता (Parrot) (2) अंटार्कटिका (दक्षिणी ध्रुव) (3) सफेद कबूतर (4) कोयल (5) शुतुरमुर्ग (6) गोडावड़ (7) बया (8) कीवी (9) अलीपुर (कोलकाता) (10) 12 नवम्बर

अन्तर ढूँढ़िए

(1) प्याले के गुलाल का रंग अलग (2) पिचकारी का आकार छोटा (3) Festival में I गायब (4) लड़के के जूते का रंग अलग (5) बाल्टी का हेंडल गायब (6) गुब्बारे का आकार बड़ा (7) मिठाई की प्लेट अतिरिक्त (8) एक गुब्बारा अतिरिक्त

दिमागी कसरत

(1) आसपास (2) तकनीक (3) सरदार (4) झिलमिल (5) छुई–मुई (6) मानसून (7) पूछताछ (8) धूमधाम (9) लगभग (10) धनवान (11) सूझबूझ (12) भरपूर (13) फिलहाल (14) सुनसान (15) तोड़फोड़

बूझो तो जानें

(1) होली (2) बादल (3) इन्द्रधनुष (4) माँ (5) गुरु

बताओ तो जानें

पंख नम्बर 3

वर्ग पहेली

1 धु	2 लं	डी	■	3 रा	म	4 दे	5 व
6 न	ग	■	7 बा	ज	■	8 ह	र
9 ना	र	द	■	10 स्था	न	■	दा
■	■	■	11 शा	न	■	12 जा	न
13 शि	14 क	15 न	■	■	16 दा	दू	■
17 व	ल	य	■	18 ब	र	ग	19 द
20 रा	श	न	21 का	र्ड	■	22 र	वा
त्रि	■	■	23 म	न	का	■	त

सुडोकू

2	7	8	1	4	5	9	3	6
5	3	4	9	6	2	8	1	7
1	6	9	8	7	3	5	2	4
7	4	2	5	3	6	1	9	8
6	9	3	7	1	8	2	4	5
8	5	1	4	2	9	6	7	3
9	2	6	3	8	4	7	5	1
3	8	7	2	5	1	4	6	9
4	1	5	6	9	7	3	8	2

पढ़ो और जीतो का परिणाम :

जनवरी अंक पर आधारित प्रश्नावली को हल करने में **देविक कश्यप, बीकानेर** को पुरस्कार के योग्य माना गया। साथ ही **नवीन टांक, मकराना एवं गगेन्द्र मुद्गल, भरतपुर** के प्रयास भी सराहनीय रहे।

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 9, ठाणे (महाराष्ट्र)

अर्पिता तातेड़, कक्षा 8, कोलकाता।

दृष्टि, जूनियर के.जी., चित्तौड़गढ़

गर्विश जैन, कक्षा 7, भीण्डर

आयशा लोहिया, कक्षा 7, राजसमन्द

दैविक कश्यप, कक्षा 4, बीकानेर

मैं पृथ्वी हूँ

सबका भरण पोषण करने वाली मैं पृथ्वी हूँ। मेरे पास प्रकृति की अनन्त सम्पदा है। मगर मैं अभी बहुत दुखी हूँ यदि मानव का उत्पात ऐसा ही होता रहा है। तो मैं मानव को आगाह कर रही हूँ! चारों तरफ बाढ़ और भूकम्प, सूखा का सामना करना पड़ेगा।

यदि पृथ्वी को रहने लायक रखना है तो पर्यावरण के साथ खिलवाड़ को रोकना पड़ेगा। माँ का दूध पिया जाता है खून नहीं पिया जाता। लोग इसीलिए मुझे धरती माँ कहकर पुकारते हैं। आज फिर से काँप उठी है देखो, धरती माँ की कोख।

कीर्ति गोयल, कक्षा 6, सिलीगुड़ी

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल हमें
मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस

'शक्ति हो तुम, सशक्त बनो !'

मीरा

तुलसी

रिंकू बंजारा

तुलसी भील

हिमानी

प्रिया

गीता

राधा

पानेरी

सुगना, राधा

: सामग्री सौजन्य :

आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन

द्वारा गांवों में संचालित

सखियों की बाड़ी केंद्र,

ब्लॉक- आबू रोड़, सिरोही

पिंकी बंजारा

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

रामेश्वरम मन्दिर में विश्व का सबसे लम्बा गलियारा

भगवान शिव को समर्पित रामेश्वरम मन्दिर भारत के 12 ज्योतिर्लिंग और चार धाम में से एक है। रामेश्वरम मन्दिर न केवल आध्यात्मिक रूप से आकर्षक है, बल्कि वास्तुशिल्प की दृष्टि से भी यह अत्यन्त सुन्दर है। रामेश्वरम मन्दिर लगभग एक हजार फीट लम्बा और 650 फीट चौड़ा है। रामेश्वरम मन्दिर का गलियारा विश्व का सबसे लम्बा गलियारा है।

बिना ब्लेड का झूमर पंखा

उदयपुर के युवा मेहुल सोनी की नई सोच ने झूमर पंखा बनाया है। उन्होंने इसे बाजार में लॉन्च करने के लिए ओल्टाओ कम्पनी स्थापित की है। अगले साल तक इसे देश के 16 शहरों तक पहुँचाने का लक्ष्य है। इसे शुरू करने पर ब्लेड बाहर निकलती है और बन्द करने पर सिमट जाती है और पंखे की जगह झूमर लगा दिखाई देता है। नई जनरेशन के इन पंखों में बेहद आधुनिक बीएलडीसी मोटर इंस्टॉल की गई है, जो बिजली खपत को काफी कम करती है।

107 साल की एथलीट राम बाई ने जीते 2 गोल्ड मेडल

हरियाणा के चरखी दादरी जिले के कादमा गाँव की 107 साल की दादी राम बाई ने हैदराबाद में आयोजित 5वीं राष्ट्रीय मास्टर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में हरियाणा की ओर से दौड़ स्पर्धा में भाग लेकर 2 गोल्ड मेडल हासिल किए। चैम्पियनशिप के आयोजकों ने राम बाई को 2500 खिलाड़ियों के सामने पोस्टर-बैनर लगाकर प्रेरणा स्रोत के रूप में पेश किया।

एक्सपोसैट का सफल प्रक्षेपण

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने खगोलीय वैधशाला एक्सपोसैट का सफल प्रक्षेपण किया। इसके साथ ही भारत ब्लैक होल, आकाशगंगाओं व न्यूट्रॉन तारे के अध्ययन के लिए समर्पित उपग्रह लॉन्च करने वाला अमरीका के बाद विश्व का दूसरा देश बन गया। श्री हरिकोटा के अंतरिक्ष केन्द्र के लॉन्च पैड से 1 जनवरी को सुबह 9:10 बजे पीएसएलवी सी-58 ने उड़ान भरी और 22 मिनट बाद एक्सपोसैट को धरती से 650 किलोमीटर पर निर्दिष्ट कक्षा में स्थापित कर दिया।

दुनिया का सबसे बड़ा क्रूज

फिनलैंड में तैयार क्रूज में एक फूड हॉल, छह स्विमिंग पूल और दुनिया के किसी भी क्रूज जहाज से बड़ा समुद्री वाटर-पार्क है। एक बालकनी वाले मॉड्यूलर स्टेटरूम हैं। वहीं, अल्टीमेट फैमिली टाउनहाउस सुईट तीन डेक तक फैले हैं जिनमें पर्सनल डेक और कई बालकनी हैं। यह शिप रॉयल कैरेबियन का तरलीकृत प्राकृतिक गैस और ईंधन सेल टेक्नोलॉजी द्वारा संचालित पहला जहाज होगा। यह 20 हैक वाला शिप 1198 फीट लम्बा, 250800 टन वजनी व 7600 लोगों की अधिकतम क्षमता वाला है।

भारतीय अमरीकी छात्रा सबसे प्रतिभाशाली

भारतीय मूल की अमरीकी स्कूली छात्रा प्रीशा चक्रवर्ती आयु 9 वर्ष को विश्व के सबसे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की सूची में शामिल किया गया है। यह सूची 90 देशों में हुए 16,000 विद्यार्थियों के ग्रेड लेवल परीक्षण के आधार पर जॉन्स हॉपकिन्स सेंटर फॉर टैलेंटेड यूथ ने जारी की है।

Science of Living

Let us learn Asanas

DIAMOND POSTURE (VAJRASAN)

METHOD :

Sit on the carpet by bending your knees. Let both the feet be towards the back. Keep the toes of one feet over the other. Let ankles remain free. Bring the knees close together. Rest the palms of the hands on the respective knees. Now sit between the ankles and over the two calves. Let the back and the neck be straight. Breathe normally.

ADVANTAGE :

This is also a useful posture for meditation. Practice this posture every morning. After each meal, you must sit in this posture for five to ten minutes. It helps to digest food and increase memory.

HAPPY POSTURE (SUKHASAN)

METHOD :

Spread a carpet (or a mat, or a piece of thick cloth) on the ground and sit comfortably. Keep the back and the neck straight. Fold the left leg and tug it below the right leg. Then fold the right leg and tug it below the left leg. Place the palms on the knees. Touch the tips of thumb and index finger. Keep rest three fingers straight. Sit in this posture as long as you feel comfortable.

ADVANTAGE :

This is a good posture for meditation. Practicing of this posture increases concentration and keeps the body free from illness.

अमर चित्रकथा के कथा शिल्पी

अनंत पै

ऐसा कौन होगा जिसने बचपन में कॉमिक्स या चित्रकथा की पुस्तक न पढ़ी हो? क्या आप जानते हैं भारत में इन पुस्तकों की रचना किसने की और कैसे की?

भारतीय इतिहास तथा पौराणिक पात्रों के आधार पर चित्रकथा बनाने वाले चिन्तक और कलाकार का नाम अनंत पै है। इनका जन्म 17 सितम्बर, 1929 को करकाला कर्नाटक में श्री वैंकटार्य एवं सुशीला पै के घर में हुआ था। बचपन से चित्र और छपाई कला में रुचि होने के कारण शिक्षा के बाद अनंत पै ने 1954 में 'मानव' नामक बाल पत्रिका निकाली पर उसमें सफल न होने पर वे 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में काम करने लगे। उन दिनों उसमें बेताल और फैंटम जैसे विदेशी पात्रों पर आधारित 'इंद्रजाल कामिक्स' नामक चित्रकथा छपती थी।

इससे प्रभावित होकर उनके मन में पौराणिक एवं ऐतिहासिक पात्रों पर आधारित चित्र कथा प्रकाशित करने का विचार आया। उन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया से त्यागपत्र दे दिया। लम्बे संघर्ष के बाद 'इंडिया बुक हाउस' के श्री मीरचंदानी के सहयोग से 'अमर चित्रकथा' प्रकाशित होने लगी। यह बच्चों के मध्य बहुत लोकप्रिय हुई। भारत के महापुरुष, वीर महिलाएँ, पौराणिक पात्र, प्रख्यात वैज्ञानिक, स्वाधीनता सेनानी आदि विषयों पर उन्होंने लगभग 450 पुस्तकें बनाईं। इनकी देश की 20 भाषाओं में दस करोड़ प्रतियाँ बिकीं।

अब वे बच्चों में 'अनंत चाचा' के नाम से विख्यात हो गए। बाद में उन्होंने 'रंग रेखा फीचर्स' तथा अँग्रेजी बाल पत्रिका 'ट्विंकल' प्रारम्भ की। इसके पहले अंक की 40 हजार प्रतियाँ बिकीं। इसके कार्टून पात्र बच्चों में खूब लोकप्रिय हुए। अनंत चाचा की सफलता का कारण उनकी विशिष्ट शैली थी। वे काम करते समय स्वयं बच्चों की मानसिकता में डूब जाते थे। उन्होंने हिन्दी तथा अँग्रेजी में बच्चों के लिए सफलता के रहस्य, व्यक्तित्व विकास, स्मृति शास्त्र आदि पुस्तकें तथा वेदों की जानकारी देने के लिए 'एकम् सत्' नामक वीडियो फिल्म भी बनाई। कहानी सुनाते हुए उनके कई ऑडियो टेप भी लोकप्रिय हुए। श्री अनंत पै सदा नये विचारों पर काम करते रहते थे। 24 फरवरी, 2011 को हुए भीषण हृदयाघात से बच्चों के प्रिय अनंत चाचा सचमुच अनंत की यात्रा पर चले गये। आश्चर्य है कि वर्तमान दौर में भी उनकी पुस्तकों की लगभग तीन लाख प्रतियाँ प्रतिवर्ष बिकती हैं।

सुरेश बाबू मिश्रा
बरेली (उत्तर प्रदेश)

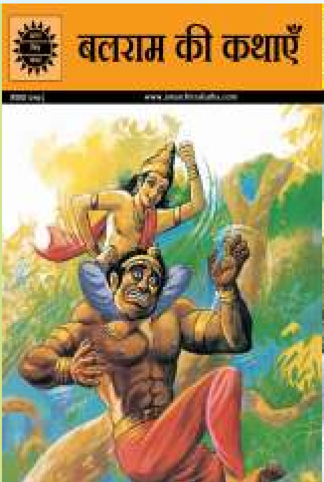

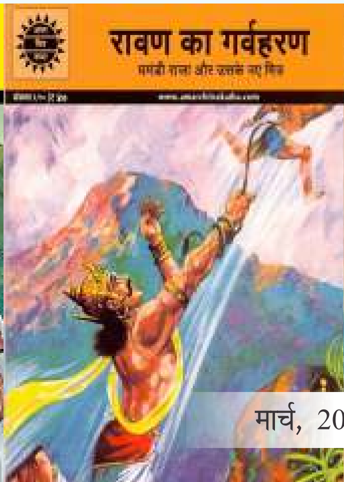

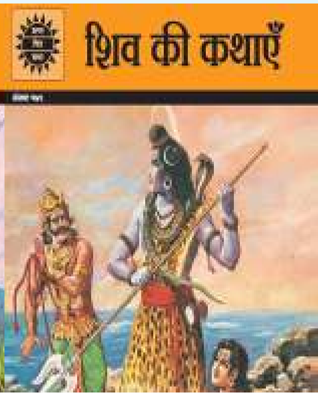

जान बड़ी कि दावत

चित्रकथा-

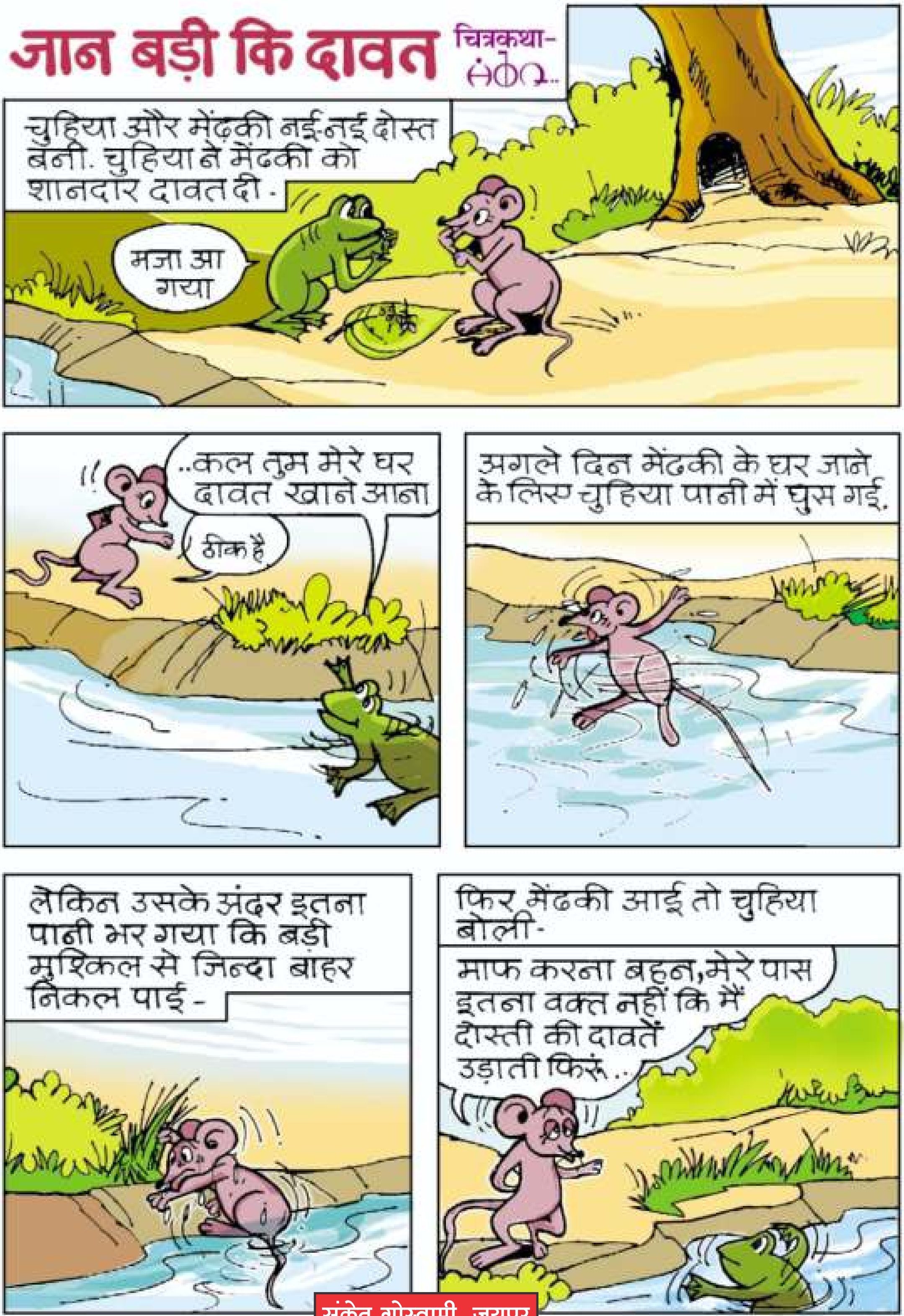

संकेत गोस्वामी, जयपुर

किड्स कॉर्नर

Colour the Picture

Colour the picture as suggested.

Shapes! Shapes!

Cut the names of the shapes and paste next to the correct shape.

star

circle

diamond

triangle

जन्मदिन की बधाई

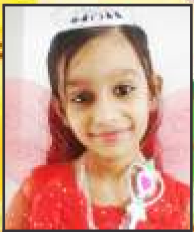

01 मार्च
आलिया चौहान
बीकानेर

02 मार्च
वेदांशी जैन
सिलीगुड़ी

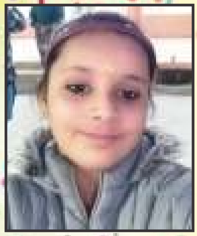

17 मार्च
खुशी कौशिक
बीकानेर

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC
International

Celebrating 33 YEARS
1989-2022

AGC
Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टैस्ट

पुरस्कार वितरण समारोह

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष राष्ट्रव्यापी 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टैस्ट' आयोजित की जाती है। वर्ष 2023 की इस प्रतियोगिता का मुख्य विषय 'असली आजादी अपनाओ' रखा गया। इसके अंतर्गत लेखन, चित्रकला, गायन, भाषण और कविता, इन पाँच वर्गों में यह प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें भारत के 18 राज्यों के 81 जिलों में स्थित 1150 विद्यालयों ने भाग लिया। करीब एक लाख विद्यार्थी इसमें प्रतिभागी बने। इसकी राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण समारोह आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 13 फरवरी को वाशी मुंबई में आयोजित हुआ। प्रस्तुत है उस कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ-

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

राम मनोहर लोहिया

जन्म : 23 मार्च 1910

निधन : 12 अक्टूबर 1967

"जीवित प्राणियों में जो बुराई है, उसे अचानक समाप्त नहीं किया जा सकता। अधिक से अधिक, उनकी पैदाइश रोकी जा सकती है। अतः बुराई रूपी बर्रों को बराबर खिड़की से बाहर निकालते रहना होगा और उनके पलने की जगहों को खोज कर साफ करते रहना होगा।"

राम मनोहर लोहिया एक स्वतन्त्रता सेनानी, समाजवादी चिंतक और सम्मानित राजनेता थे। वे अपनी प्रखर देशभक्ति और तेजस्वी समाजवादी विचारों के लिए जाने गए। उन्होंने समाजवादी पार्टी एवं कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। कांग्रेस सोशलिस्ट सप्ताहिक मुखपत्र के सम्पादक बनाए गए। उन्होंने गोवा के पंजिम में 'गोवा मुक्ति आंदोलन' का नेतृत्व किया। लोहिया भारतीय राजनीति में गैर कांग्रेसवाद के शिल्पी थे। वे हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक और समाजवादी आंदोलन के प्रणेता थे।